वार्षिक 300/- रूपए
website : www.vhp.org

मूल्य 15 रूपए
कुल पृष्ठ - 28

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

मई (16-31), 2024

# हिन्दू विश्व

# जिहाद के प्रकट होते नित नये रूप

बंगलोर में CA's के साथ में ''भारतीय जीवन मूल्यों की आज प्रासंगिकता''
विषय पर एक संवाद कार्यक्रम को संबोधित करते विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद जी पराण्डे




आकलैण्ड में श्री हनुमान युवा केंद्र का अनावरण समारोह आयोजित किया गया
जिसमें 100 से अधिक समर्पित स्वयंसेवकों तथा सामुदायिक नेताओं ने सहभागिता की।

विशाखापट्टनम, आंध्र प्रदेश में समाज के विशिष्ट महानुभावों के साथ
संवाद के कार्यक्रम को संबोधित करते वहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद जी पराण्डे।

# इस पक्ष में ....


# हिन्दू विश्व
राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

16-31 मई, 2024
**वैशाख शुक्ल-ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष**
पिंगल संवत्सर
वि. सं. - 2081, युगाब्द- 5126

**सम्पादक**
विजय शंकर तिवारी

**सह सम्पादक**
मुरारी शरण शुक्ल
**मो. - 7217685539**

**परामर्शदाता**
सर्वश्री राजेन्द्र शर्मा,
धर्मनारायण शर्मा, विजय कुमार,
रवि पराशर

**व्यवस्थापक**
श्री दूधनाथ शुक्ल
**मो. - 09582555152**

**सज्जा**
श्री महेश कुशवाहा

**कार्यालय :**
**'हिन्दू विश्व'**
संकटमोचन आश्रम, प्रभाग - 6
रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली-110022-05
दूरभाष : 09582555152

011-26178992, 011-26103495
hinduvishwa@gmail.com

**- : मूल्य :-**

| | |
|---|---|
| विदेशों के लिए | $ 75 USD |
| वार्षिक डाक व्यय सहित | |
| एक प्रति | 15/- |
| वार्षिक | 300/- |
| त्रिवर्षीय | 750/- |
| पंचवर्षीय | 1,200/- |
| दसवर्षीय | 2,250/- |
| पन्द्रह वर्षीय | 3,100/- |



**वैधानिक सूचना**
- 'हिन्दू विश्व' में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- 'हिन्दू विश्व' से सम्बन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 महीने के अन्दर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में होंगे।



@eHinduVishwa
@eHinduVishwa
@eHinduVishwa

कुल पेज - 28


**भीषण शक्ति से युक्त इंद्रदेव सोमरस पान कर अपने बल की वृद्धि करते हैं। तदनन्तर, सौंदर्यशाली, श्रेष्ठ शिरस्त्राण धारण करने वाले, रथ में अश्वों को नियोजित करने वाले इन्द्रदेव दाहिने हाथ में लौह-निर्मित वज्र को अलंकार के रूप में धारण करते हैं।**

**- सामवेद**





| | |
|---|---|
| भारत को पुनः विश्व गुरु और विश्व का अग्रणी देश बनाया जा सकता है | 08 |
| भारत में धार्मिक पर्यटन छू रहा नित नई ऊचाइयाँ | 10 |
| मुस्लिम तुष्टिकरण के लिए किसी भी सीमा तक जाएंगे राजनीतिक दल | 12 |
| श्रीराम महोत्सव कार्यक्रम | 13 |
| विरासत टैक्स एवं निजी सम्पत्ति सर्वे पर संकट में घिरी काँग्रेस | 14 |
| हनुमान जन्मोत्सव पर विहिप, बजरंग दल द्वारा भव्य रथ यात्रा आयोजित | 15 |
| प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार के लिए वोट करें, राष्ट्र के लिए वोट करें | 16 |
| मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः | 18 |
| हिन्दू धर्म में तिल का महत्व | 20 |
| गर्भवती महिलाओं के लिए पथ्य | 22 |
| जहांगीरपुरी में एक जिहादी ने की हिंदू महिला की हत्या, विहिप ने किया निंदा | 23 |
| श्री हनुमान युवा केंद्र का अनावरण जबरदस्त सामुदायिक समर्थन | 24 |
| सातवां ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रीय हिंदू सम्मेलन सम्पन्न | 25 |


## सुभाषित

**मर्माण्यस्थीनि हृदयं तथासून्, रूक्षा वाचो निर्दहन्तीह पुंसाम्।**
**तस्माद् वाचमुषतीं रूक्षरूपां, धर्मारामो नित्यशो वर्जयेत।।**

*इस जगत में रूखी बातें मनुष्यों के मर्मस्थान हड्डी, हृदय तथा प्राणों को दग्ध करती रहती हैं, इसीलिए धर्मानुरागी पुरुष जलाने वाली रूखी बातों का सदा के लिए परित्याग कर दें।*

# सम्पादकीय

विजय शंकर तिवारी

# रोहित वेमुला को दलित बताकर देशभर में हंगामा मचाने वाले क्या अब सार्वजनिक माफी मांगेंगे?

रोहित वेमुला को लेकर देशभर के विश्वविद्यालयों में 2016 में विरोध प्रदर्शन हुए थे। काँग्रेस सहित सभी सेक्यूलर राजनीतिक दलों ने रोहित वेमुला को दलित बताकर संपूर्ण देश में अराजकता फैलाने का काम किया था, उसकी आत्महत्या के मामले से राजनीतिक लाभ लेने का भरपूर प्रयत्न भी किया था। राजनीतिक छींटाकशी करने की होड़ में गिरावट की सारी हदें पार कर दी, राजनीतिक सुचिता को नष्ट–भ्रष्ट कर दिया। लेकिन अब जब तेलंगाना में काँग्रेस सरकार है, ऐसे में पुलिस ने तेलंगाना उच्च न्यायालय को रिपोर्ट सौंपा है। उस रिपोर्ट में कहा गया है कि रोहित वेमुला यथार्थ में दलित नहीं था। उसकी माँ ने उसको अनुसूचित जाति का सर्टिफिकेट दिलवाया था। उसी सर्टिफिकेट के आधार पर आरक्षण की सुविधाएँ लेते हुए रोहित वेमुला की पढ़ाई हुई थी। उसी सर्टिफिकेट के आधार पर वह अंबेडकर स्टूडेंट्स यूनियन नामक संगठन का सदस्य भी बना था।

विवादों में नाम आने के बाद जब सब परतें खुलने लगी, मिडिया और सामाजिक संगठनों ने छानबीन करना शुरु कर दिया, जब यह उजागर होने लग गया कि रोहित वेमुला अनुसूचित जाति का नहीं है, तो जाति का भेद खुल जाने के डर से रोहित वेमुला ने आत्महत्या कर लिया। उसको यह डर सताने लग गया था कि जैसे ही जाति का भेद खुलेगा, उसके विरुद्ध कानूनी कार्रवाई होगी और उसके जेल जाने की संभावना है, बस उसने इसी घबराहट में आकर आत्महत्या कर लिया। किसी भी युवा की मृत्यु निःसंदेह दुःखद है, ऐसा नहीं होना चाहिए, लेकिन किसी भी युवा की लाश पर सेक्यूलर नेता गिद्धों की भांति टूट पड़ते हैं, उसका राजनीतिक लाभ लेने की कोशिश करने लग जाते हैं, यह उससे भी अधिक दुःखद है। यदि कोई विद्यार्थी अपनी गलत पहचान का प्रमाणपत्र बनवा लेता है, तो उसकी उस गलती को सत्यापित करना भी बहुत बड़ा अपराध है। संविधान की दुहाई देकर ऐसे पाप करने वाले नेता वस्तुतः संविधान विरोधी ही हैं। ऐसे अवसरवादी राजनीति का देशभर में बहिष्कार होना चाहिए।

रोहित वेमुला समेत पाँच छात्रों ने एबीवीपी के एक छात्र सदस्य पर 2015 में हमला किया था। हैदराबाद विश्वविद्यालय ने अपने आरम्भिक जांच में इन सभी पाँच छात्रों को क्लीन चिट दे दिया था, किन्तु फिर इनको छात्रावास से निष्कासित कर दिया था। इस मामले को सेक्यूलर दलों द्वारा बहुत राजनीतिक तूल दिया गया, क्योंकि उस समय कर्नाटक विधानसभा चुनाव बहुत निकट थे। यह मामला इससे बहुचर्चित हो गया, इसके सहारे सेक्यूलर दलों, माओवादी–मार्क्सवादी गिरोह और हिन्दू विरोधियों के साथ मिलकर काँग्रेस ने भाजपा को घेरने की कोशिश की। भाजपा के नेताओं, उनके शीर्ष नेतृत्व, एबीवीपी और संघ परिवार पर वैचारिक हमले किए गए। इससे इन छात्रों की जांच–पड़ताल बहुत तेज हो गई, रहस्य खुलने लग गया और परिणाम रोहित वेमुला की आत्महत्या के रुप में सामने आया। यथार्थ में तो रोहित वेमुला की आत्महत्या का कारण ये सेक्यूलर दल और इनका सम्पूर्ण इकोसिस्टम था। इन्होंने ही उसके मृत्यु के वातावरण का सृजन किया और फिर उसके लाश पर भी राजनीति किया। यह अवसरवादी राजनीतिक लक्षण न युवाओं के हित में है और न ही देश के हित में। सेक्यूलर नेताओं को देश हित में ऐसी हरकतों से बाज आना चाहिए। अब जब सब कुछ उजागर हो ही गया है, तो इन सेक्यूलर नेताओं को देश से माफी मांगनी चाहिए।

**किसी भी युवा की मृत्यु निःसंदेह दुःखद है, ऐसा नहीं होना चाहिए, लेकिन किसी भी युवा की लाश पर सेक्यूलर नेता गिद्धों की भांति टूट पड़ते हैं, उसका राजनीतिक लाभ लेने की कोशिश करने लग जाते हैं, यह उससे भी अधिक दुःखद है। यदि कोई विद्यार्थी अपनी गलत पहचान का प्रमाणपत्र बनवा लेता है, तो उसकी उस गलती को सत्यापित करना भी बहुत बड़ा अपराध है। संविधान की दुहाई देकर ऐसे पाप करने वाले नेता वस्तुतः संविधान विरोधी ही हैं। ऐसे अवसरवादी राजनीति का देशभर में बहिष्कार होना चाहिए।**

# जिहाद के रूप अनेक मकसद एक संपूर्ण इस्लामीकरण

मुरारी शरण शुक्ल
(सह सम्पादक हिन्दू विश्व)

फर्रुखाबाद के काँग्रेस नेता सलमान खुर्शीद की भतीजी मारिया आलम खान ने 30 अप्रैल 2024 को उत्तरप्रदेश के कायमगंज में समाजवादी पार्टी के उम्मीदवार नवल किशोर शाक्य के लिए वोट मांगते हुए, एक सार्वजनिक चुनावी सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि मुसलमानों को भाजपा को हराने के लिए अब वोट जिहाद करना चाहिए। यह पहला अवसर नहीं है, जब किसी चुनाव में जिहाद की चर्चा हुई हो। सभी चुनावों में जिहाद की चर्चा किसी न किसी रूप में होती रही है। ऐसे में यह जानना बहुत जरुरी है कि यह जिहाद क्या है?

### वोट जिहाद

पहले जब भी कोई चुनाव होता था, चाहे वह विधानसभा हो, या लोकसभा चुनाव, सेक्युलर दलों के नेता दिल्ली के जामा मस्जिद के इमाम के पास जाते थे, वहाँ से फतवा जारी होता और देशभर के मुसलमान उसी दल को वोट करते, जिस दल के लिए फतवा जारी होता था। मौलाना बुखारी के बाद ईमाम बुखारी के समय यह फतवा निष्प्रभावी हो गया। वोटों के लिए जारी किया गया यह फतवा वोट जिहाद ही तो था। 90 के दशक में अनेक मुस्लिम नेता सेकुलर दलों में उभर आए। जामा मस्जिद के फतवों को लागू करने वाले मुस्लिम नेता, अब स्वयं राजनेता बन चुके थे। अब जामा मस्जिद की जगह, इनका फतवा राजनीतिक दलों में चलने लगा। सभी दलों में मुस्लिम नेताओं को शामिल करने का ऐसा दौर चला कि बिना मुस्लिम नेता के जैसे कोई राजनीतिक दल चुनाव जीत ही नहीं सकता। मुसलमान नेताओं को राजनीतिक दलों में सम्मिलित करने का प्रयत्न वोट बैंक की राजनीति को ध्यान में रखकर ही किया जाता रहा है। यह भी एक प्रकार से वोट जिहाद ही है।

### लव जिहाद

प्रेम की आड़ में काफिर लड़कियों को फंसाना और फिर उनका धर्म परिवर्तन करवाना, यह चलन बहुत जोरों से चला

और गैर मुस्लिम समुदाय इससे इतना प्रभावित हुआ कि केरल जैसे राज्यों में ईसाई मत के लोग न्यायालय पहुंच गए। न्यायालय से यह प्रार्थना किया कि उनके समुदाय की लड़कियों को मुसलमान भगाकर ले जा रहे हैं, उनका धर्म परिवर्तन करवा रहे हैं। इस मामले को केरल उच्च न्यायालय ने बड़ी गंभीरता से लिया। पूरे प्रदेश में इस विषय पर छानबीन कराई गई और यह पाया गया कि वास्तव में सुनियोजित रूप से मुस्लिम युवा ईसाई और हिंदू लड़कियों को बहुत बड़ी संख्या में भगाकर ले जा रहे हैं, उनका धर्म परिवर्तन करवा रहे हैं। केरल उच्च न्यायालय इस विषय को देखकर हैरान था। केरल उच्च न्यायालय ने ही इस पूरे घटनाक्रम को लव जिहाद का नाम दिया।

### लैंड जिहाद

वैसे तो मजार, मस्जिद, कब्र बनाकर भूमि पर कब्जा करने के अनेक जिहादी तरीके हैं, किंतु काँग्रेस ने भारत में वक्फ बोर्ड बनाया और वक्फ बोर्ड को धीरे–धीरे अधिक शक्ति प्रदान की गई। मनमोहन सरकार ने जाते–जाते वक्फ बोर्ड को इतनी शक्ति दे दी कि पूरे देश में वक्फ बोर्ड किसी की भी संपत्ति को अपनी संपत्ति घोषित कर सकता है और जिसकी वह संपत्ति है, वह उस संपत्ति के बारे में जिला न्यायालय में शिकायत तक दर्ज नहीं करा सकता। वक्फ बोर्ड की संपत्ति के बारे में जिला न्यायालय को मुकदमा दर्ज करने का अधिकार ही नहीं है। अभी अनेक घटनाएँ ऐसी हुई, जिसको लेकर स्थानीय प्रशासन से लेकर सरकार तक परेशान है, तमिलनाडु के अनेक गाँव की संपत्ति को वक्फ बोर्ड ने अपनी संपत्ति घोषित कर दिया। दिल्ली में 121 सरकारी संपत्ति को मनमोहन–सोनियाँ सरकार ने जाते–जाते वक्फ बोर्ड को सौंप दिया। इस प्रकार से जमीन पर कब्जा करने की खुली छूट कानून के दायरे में वक्फ बोर्ड को दे दी गई। आज वक्फ बोर्ड के पास रेलवे के बाद सबसे अधिक संपत्ति है। इस पर अनेक उच्च न्यायालयों में मुकदमा चल रहा है और अनेक राज्य सरकारों में भी बहुत चिंता दिखाई दे रही है।

## हलाल इकोनॉमी

मुसलमान की कंपनी, मुसलमान कारीगर, मजदूर के द्वारा निर्मित उत्पाद हलाल उत्पाद कहलाते हैं। पूरी उत्पादन प्रक्रिया मुसलमानों के द्वारा ही की गई हो, तभी उसे हलाल उत्पाद कहा जाता है। पूरी मुस्लिम बिरादरी में यह बात प्रसारित की जाती है कि वे हल उत्पाद ही खरीदें। वर्तमान में हलाल इकोनामी का आकार कई देशों की अर्थव्यवस्थाओं से भी बड़ा हो गया है। यह दुनियाँ की अर्थव्यवस्था पर एक तरफा कब्जा का प्रयत्न है। भारत जैसे देश में भी हलाल इकोनामी लगातार फल फूल रही है। आरंभ में इस्लामिक बैंक स्थापित करने की कोशिश हुई थी। इसमें सफलता न मिलने से हलाल इकोनामी की संकल्पना भारत पर थोपने की कोशिश हुई और इसमें उन्हें सफलता भी मिल रही है। हलाल सर्टिफिकेशन मस्जिदों के मौलाना करते हैं और बड़ी–बड़ी कंपनियों को यह सर्टिफिकेट लेने को विवश किया जा रहा है। हलाल सर्टिफिकेट न लेने पर उन्हें धमकाया जाता है कि आपका उत्पाद मुसलमान नहीं खरीदेंगे, आपका माल मुस्लिम देशों में नहीं बिकेगा। अब तो हलाल अपार्टमेंट भी बनने लग गए हैं, हलाल मॉल भी हैं, हलाल डेटिंग साइट्स भी हैं। पहले केवल मांस के व्यापार तक सीमित था, लेकिन अब हलाल सैलून भी हैं, हलाल नाम से व्यापार पर बहुत बड़ा कब्जा है।

## अर्थ जिहाद

मुसलमान अपने पैसे बैंकों में नहीं रखता है, वह बैंक में खाता भी नहीं खुलवाता है, मुसलमान नगद व्यापार करना पसंद करता है, वह टैक्स भी नहीं देना चाहता। बैंक में खाता न होने से उसका लेनदेन ट्रेस करना कठिन होता है। इस तरह से वह सरकार को आर्थिक लाभ नहीं देना चाहता। अपना अर्थ अपने तरीके से उपयोग करता है। अपने आय का लाभांश कर के रूप में सरकार को देने से बचता है।

## व्यापार जिहाद

मुसलमान कम पूंजी के व्यापार करता है, अपने सभी लोगों को धीरे–धीरे उस व्यापार में शामिल करता है। किसी भी एक व्यापार में धीरे–धीरे मुसलमानों की

संख्या बढ़ती जाती है और उस व्यापार पर कब्जा करने का प्रयत्न होता है। जब एक व्यापार पर पूरा कब्जा हो जाता है, तब वह दूसरे छोटे व्यापार पर भी इसी प्रकार कब्जा करने की कोशिश करता है। आज अनेक कम लागत के व्यापार पर मुसलमानों का पूर्ण कब्जा हो चुका है। बड़े शहरों में सैलून का व्यापार उनके कब्जे में है, रजाई–गद्दे का कारोबार, कबाड़ का धंधा, जरी और कढ़ाई का काम, कई शहरों में सोने–चांदी की कारीगरी का काम, मोटर मैकेनिक, गैराज का काम, मोटरसाइकिल रिपेयरिंग, इलेक्ट्रिशियन, प्लंबर, मशीनरी की कारीगरी से जुड़े काम, बैटरी की रिपेयरिंग से जुड़ा काम, ऐसे बहुत सारे व्यापार उनके कब्जे में है। मांस काटने और बेचने का काम भी उनके कब्जे में है। इस प्रकार से छोटे व्यापार पर कब्जा आरंभ करके, धीरे–धीरे बड़े कारोबार पर भी कब्जे का इनका प्रयास रहता है और यह काम वो लगभग हर देश में करते हैं।

## भाषा जिहाद

जहाँ भी मुसलमान रहता है, उसे देश के लोगों पर अपनी भाषा खोपने का प्रयास करता है। वह चाहता है कि सभी लोग उसी की जुबान बोलें। फिल्म, सीरियल, साहित्य, कविता, उपन्यास, गीत–संगीत के माध्यम से वह लगातार अपने शब्दों को दूसरों के ऊपर थोपने का प्रयास करता है। भारत में अनेक शब्द फिल्मों के माध्यम से जनता के व्यवहार में डाले गए। मुसलमान मीडिया की शब्दावली को भी प्रभावित करने की कोशिश करता है, आज भारत में लगभग सारे समाचार चैनल, अखबार, मैगजीन उर्दूनिष्ठ हिंदी लिखने, बोलने लग गए हैं और इसी को वह स्तरीय भाषा मानने लग गए हैं। उनको लगता है कि हम उर्दूनिष्ठ हिन्दी नहीं बोलेंगे, तो अच्छे पत्रकार नहीं कहलायेंगे। यह ट्रेंड मुसलमानों द्वारा अपनी भाषा थोपने के अनेक तरीके अपनाने से ही शुरू हुआ है।

## वेश जिहाद

जहाँ इस्लाम की उत्पत्ति हुई, वहाँ कपास की खेती नहीं होती थी, धागे भी नहीं बनते थे, कपड़े भी नहीं बनते थे, तो कोई वेश उनका होगा, यह कल्पना से परे है। किंतु मुसलमान जहाँ गए, उनके वेश को उन्होंने अपना वेश बनाया और दूसरों पर वही वेश थोपने की कोशिश की। कुर्ता भारतीय वेश है, पजामा भी भारतीय वेश है, किंतु मुसलमानों ने उसको अपने तरीके से ढाल लिया, अपने अलग डिजाइन बना लिए और वही वेश अब वह सब पर थोपने की कोशिश कर रहे हैं। ऊंचा पजामा, क्योंकि वह रेगिस्तान में रहते थे, लंबा कुर्ता, क्योंकि उनको वह रेत और धूल से ढंकता था। अपनी मजबूरी में विकसित किए गए इस डिजाइन को वह दूसरों पर सतत थोपने की कोशिश करते हैं। चुराई हुई औरतें, ढंक कर रखी जाती थी, जिससे पहचानी ना जा सकें और वही बुर्का आज सब पर थोपने की कोशिश कर रहे हैं।

## प्रशासनिक सेवा जिहाद

सत्ता पर कब्जा जमाने की कोशिश में भारत में इस्लामी ताकतें अब मुसलमान युवाओं को प्रशासनिक सेवा में अधिक से अधिक संख्या में भर्ती कराने की कोशिश कर रहे हैं। इसके लिए इस्लामिक संगठनों ने मुस्लिम युवाओं के लिए कोचिंग की सुविधा विकसित की है। उर्दू भाषा के शिक्षकों के बीच एक बड़ी लाबी खड़ी की है, जिससे उर्दू भाषा को लेकर मुस्लिम युवा जब सिविल सेवा की परीक्षा दें, तो उनको उपयुक्त अंक देकर सफलता सुनिश्चित की जा सके। इधर के कुछ वर्षों में इस

कारण से अधिक संख्या में मुस्लिम युवा प्रशासनिक सेवा में चुनकर आ रहे हैं। यह भी एक प्रकार का जिहाद है।

### रक्षा सेवा जिहाद

जहाँ बलिदान की संभावना रहती है, उन स्थानों पर मुसलमान कम जाता है किंतु पुलिस में, पैरामिलिट्री में, सुरक्षा से जुड़े अन्य संस्थाओं में, मुसलमान बड़ी संख्या में जाता है। ऐसा इसलिए कि पुलिस में अधिक संख्या होने से अंदरूनी तौर पर वह मुस्लिम समाज के काम आ सके। मुसलमान को प्रशासनिक तौर पर सहयोग और सुरक्षा दे सके और यह अनेक वर्षों से लगातार चल रहा है। जहाँ भी मुसलमान थानेदार या अधिकारी होता है, वह हमेशा मुस्लिम समाज को साथ देता है।

### पर्यावरण जिहाद

इस्लाम पर्यावरण का विरोधी है, वह सऊदी अरब में पाए जाने वाले पेड़ों का ही पक्षधर है, शेष पेड़ उसको गैर इस्लामिक नजर आते हैं और इसीलिए कई देशों में मुसलमानों ने पेड़ों की व्यापक कटाई का आदेश दिया है। यह भी उनकी जिहादी सोच का ही हिस्सा है। मुसलमान तालाब, झील और नदियों का भी पक्षधर नहीं है, क्योंकि अरब के देशों में तालाब, झील और नदियाँ पाई नहीं जाती हैं, तो प्रकृति को समृद्ध करने वाली जितनी भी चीजे हैं, मुसलमान उन सब का विरोधी है, इसीलिए वह सदा पर्यावरण को नष्ट करने का ही प्रयास करता है।

### भोजन जिहाद

समोसा इसाई है, ऐसा कहते हुए समोसे के खिलाफ फतवा जारी किया गया, भोजन की अनेक सामग्रियों के खिलाफ भी फतवे जारी हुए हैं। खाने का वह समान ही जायज है, जो अरब के देशों में खाया जाता है, बाकी सब चीजें हराम हैं। फल हो या सब्जी या बनाया हुआ कोई व्यंजन, सब हराम है। बस अरब के देशों से आया हुआ भोजन ही इनको कुबूल है, बाकी सब फिजूल है। दूसरों के भोजन में भी यह अपनी चीजें थोपने की कोशिश करते हैं।

### देश तोड़ने का जिहाद

इस्लाम वायोलेंट इंपिरियलिस्टिक रिलिजन है, जहाँ भी इनकी सँख्या धीरे–धीरे अधिक हो जाती है, उस देश पर यह कब्जा करने की कोशिश करते हैं। यदि देश पर कब्जा करने में सफलता नहीं मिलती है, तो ये उस देश को तोड़ने की कोशिश करते हैं। उस देश का विभाजन करने की कोशिश करते हैं, मुस्लिम बहुल क्षेत्र में वो अपनी सरकार की मांग करने लग जाते हैं, उनकी कोशिश रहती है कि उन क्षेत्रों में उनकी अपनी हुकूमत चलने लग जाए। ऐसा करके उन्होंने कई देशों पर कब्जा किया है। इसमें ईरान, इराक, सीरिया, तुर्की इत्यादि अनेक देश हैं। आज ये भारत पर भी कब्जा करने की कोशिश कर रहे हैं, पहले भारत का विभाजन करवा चुके हैं, आगे और भी विभाजन करने की कोशिश कर रहे हैं, इनका सपना तो पूरे भारत पर कब्जा करने का ही है। आज मुसलमान यूरोप के देशों पर भी कब्जा करता दिखाई दे रहा है, अमेरिका में भी अपनी संख्या बढ़ाने में लगा हुआ है, अफ्रीका के कई देशों में इस्लाम समस्या बना हुआ है, उनकी कोशिश चीन और रूस में भी अपनी ताकत बढ़ाने की थी, जहाँ उनकी नहीं चल पाई। चीन और रूस की ताकत के आगे इनको धराशाई होना पड़ा।

### वफादारी और धोखाधड़ी

मुसलमान कितना भी पढ़ा लिखा हो, वह दूसरे धर्म के लोगों से वफादारी यदि करता है, तो वह भविष्य में अपनी धोखाधड़ी को लागू करने की नीयत से ही करता है। आज की कमाई हुई वफादारी कल उसके द्वारा जिहादी मानसिकता से की जाने वाली धोखाधड़ी की पृष्ठभूमि होता है। इसी मानसिकता से इस्लाम पूरी दुनियाँ में काम करता है।

### बकरा जिहाद

कहा तो यह जाता है कि अपने प्रिय व्यक्ति की बलि देनी चाहिए बकरीद में, किंतु अपने प्रिय व्यक्ति की जगह मुसलमान बकरे की बली देता है। बकरे को खरीदना, खिलाना, पालना, बड़े प्रेम से अपने घर में रखना और फिर एक दिन अपने बच्चों से उस पर छुरी चलवाना, उसका गला रेतना। बकरी काटने का यह काम बहुत व्यापक पैमाने पर किया जाता है। यह जीव से क्रुरता तो होती ही है, बकरी काटने के बाद मांस निकालकर उसके शरीर के बचे हुए हिस्सों को वो आसपास के नदी, तालाब में फेंकते हैं, इससे प्रकृति भी प्रदूषित होती है, पर्यावरण प्रदूषण बढ़ता है। किंतु पर्यावरण के लिए काम करने वाले संगठन और संस्थान भी इस विषय पर मौन रहते हैं। सामाजिक संगठन भी इन विषयों पर आवाज नहीं उठाते, यह विडंबना है।

### सामूहिक कत्लेआम

जब भी उनकी ताकत बढ़ जाती है, इनकी संख्या बढ़ जाती है, तो ये किसी न किसी पर्व का बहाना बनाकर, किसी घटना का बहाना बनाकर, दुनियाँ के किसी भी देश में हुई किसी वारदात का बहाना बनाकर काफिरों पर हिंसा करने पर उतारू हो जाते हैं। जो इनके मजहब को नहीं मानता, उसको ये काफिर कहते हैं और इनका मानना है कि काफिर वाजिबुल कत्ल होता है, इनका मजहब इनको काफिरों के कत्ल का जैसे लाइसेंस देता हो। पूरी दुनियाँ में जहाँ–जहाँ भी इनकी सँख्या अधिक है, वहाँ–वहाँ ये काफिरों का सामूहिक कत्लेआम करते हैं। काफिरों की हत्या के लिए हिंसक जिहाद करते हैं।

### गोहत्या

गाय सऊदी अरब में नहीं पाई जाती, इसीलिए ये गाय को पसंद नहीं करते। जैसे सब जानवरों को मार कर उनका मांस खाया जाता है, वैसे ये लोग गाय का भी मांस खाना चाहते हैं। गाय हिंदुओं के द्वारा पूज्य है, इसीलिए हिंदुओं को चिढ़ाने के लिए भी ये गाय काटते हैं। अँग्रेजों के शासनकाल में अँग्रेजों के सहारे से इन्होंने अनेक कत्लखाने आरंभ कर लिए, वही कत्लखाने आज भी चल रहे हैं। इन्होंने अनेक कत्लखाने बाद में खोल लिए और बहुत सारे कत्ल खाने अवैध चलाते थे। अवैध कत्ल खाने बहुत सारे बंद हो चुके हैं, किंतु सेकुलर दलों द्वारा शासित राज्यों में कुछ कत्लखाने आज भी चल रहे हैं। यह काम इन्होंने इतने व्यापक पैमाने पर किया कि भारत में गायों की संख्या घट गई। अब ये मांस और चमड़े का निर्यात भी कर रहे हैं, उससे बड़ी कमाई कर रहे हैं। गोहत्या उनके लिए एक जिहादी कृत्य होने के साथ–साथ व्यापार का एक बड़ा साधन है।

# भारत को पुन: विश्व गुरु और विश्व का अग्रणी देश बनाया जा सकता है

भारत को पहले सोने की चिड़ियाँ कहा जाता था। भारत को सोने की चिड़ियाँ क्यों कहते थे, यह हमें समझना होगा। भारत में सोना ना निकलने के बावजूद भी भारत के पास इतना सोना आया कहाँ से? तो उसका उत्तर है भारत की मैन्युफैक्चरिंग इंडस्ट्री। भारत की मैन्युफैक्चरिंग इंडस्ट्री इतनी समृद्ध थी, कि एक बार यूरोप के एक राजा ने कहा था, कि हम भारत के गुलाम हैं, हमारे तन पर जो कपड़ा है, भारत में बना हुआ है, हमारे खाने के टेबल पर जो भोजन है, वह भारत से आयात किए हुए मसालों से बना हुआ है, भारत से बनी हुई इस्पात से हमारी तलवारें बनी हुई हैं, जिनसे हम युद्ध लड़ते हैं। भारत का बना हुआ इस्पात इतना अच्छा था कि भारत की राजधानी दिल्ली में जो लौह स्तंभ बना हुआ है, उसको आज तक भी कभी भी जंग नहीं लगी। आज तक भी दुनियाँ भर के वैज्ञानिक वैसा लोहा नहीं बना सके।

भारत में बनी हुई ढाका की मलमल इतनी महीन थी, कि कपड़े का एक पुरे का पूरा थान एक अंगूठी से निकल जाता था। आजकल की कोई भी कपड़ा मिल इतना अच्छा कपड़ा आज तक भी नहीं बना सकी। चिकित्सा के क्षेत्र में भारत का लोहा दुनियाँ मानती थी। प्लास्टिक सर्जरी की खोज महर्षि सुश्रुत ने की थी। बेहोश करने की तकनीक महर्षि चरक ने दी थी। यह तो रहे भारत की महानता के कुछ किस्से, जो हम बचपन से ही सुनते आए हैं। बचपन में हम इन बातों पर गर्व तो करते थे, लेकिन हमारे पास सबूत नहीं थे। या यूं कहिए कि हम से छुपा दिए गए थे, अँग्रेजों द्वारा डिजाइन की गई शिक्षा पद्धति के द्वारा। लेकिन जैसे–जैसे इंटरनेट का आगमन हुआ, इंफॉर्मेशन पर कुछ गिने–चुने व्यक्तियों का एकाधिकार खत्म हो गया। सोशल मीडिया आने के बाद हमें वह जानकारियाँ उपलब्ध हो गई, जो हम से छुपाई गई थी। जैसे कि मैं अपना उदाहरण दूँ, जैसे कि एक बार मैंने यूट्यूब पर श्री एस. गुरुमूर्ति जी का लैक्चर सुना था। जिसमें उन्होंने बताया था कि एक बड़े अर्थशास्त्री इतिहासकार हुए हैं, श्री ऐंगस मैडिसन, जिन्होंने एक पुस्तक लिखी है : द वल्ड इकोनॉमि अ मिलेनियल प्रेसपेक्टिव, जिसमें उन्होंने विश्व इकोनॉमि के 2000 सालों का डाटा दिया हुआ है, इसमें उन्होंने लिखा है कि अँग्रेजों के आने के पहले सन 1700 तक विश्व की कुल आमदनी में भारत की हिस्सेदारी लगभग 24 प्रतिशत थी और यह विश्व का नंबर वन अमीर देश था, उस समय तक इंग्लैंड विश्व का एक गरीब देश था। जिसकी जीडीपी का कुल विश्व की जीडीपी में हिस्सा, केवल 2.9 प्रतिशत था।

कुछ दिनों पहले मैंने यूट्यूब पर एक वीडियो देखा, जिसमें दुनियाँ के 5 सबसे अमीर रिलिजियस इंस्टिट्यूशन के बारे में बताया गया था। नंबर दो पर था रोमन कैथोलिक चर्च, जिस के अनुयायी विश्व भर में सबसे अधिक हैं और दुनियाँ के लगभग हर देश में इस चर्च के नाम पर जमीन जायदाद है। भारत में भी इस चर्च के पास सबसे ज्यादा जमीन है। इस तरह अगर रोमन कैथोलिक चर्च की कुल संपत्ति की वैल्यूएशन की जाए, तो यह संपति लगभग 20 बिलियन डॉलर की बनती है। लेकिन आपको जानकर हैरानी होगी कि विश्व की नंबर एक धार्मिक संस्था है, केरल में स्थित श्री पद्मनाभ स्वामी जी का मंदिर। यह मंदिर अपनी धन संपदा के कारण हमेशा चर्चा में बना रहता है। इस मंदिर के अनुयायी रोमन कैथोलिक चर्च की तुलना में बहुत ही कम हैं और जमीन भी रोमन कैथोलिक चर्च की तुलना में बहुत कम है। लेकिन चर्च की कुल सम्पति है केवल 20 बिलियन डॉलर और इस मंदिर की संपदा, आप जानकर हैरान होंगे, है 770 बिलियन डॉलर। चर्च से कई गुना अधिक।

यहाँ पर सवाल धन संपदा का नहीं है, सवाल यह है कि अगर भारत के एक मंदिर के पास इतनी संपदा है, तो बाकी के मंदिरों के पास कितनी संपदा होगी, जो अँग्रेज और मुसलमान भारत से लूटकर ले गए। एक सवाल और भी उठता है कि इस मंदिर के पास इंतनी संपदा आई कहाँ से? तो इसका उत्तर है भक्तजनों के चढ़ावे से। इसका अर्थ है

यह कि श्री पद्मनाभ स्वामी जी के मंदिर की धन संपदा देखकर इस बात का अन्दाजा लगाया जा सकता है कि उन दिनों में भारत के लोग कितने अमीर रहें होंगे। यह तो रहा प्रमाण इस बात का कि भारत सोने की चिड़ियाँ थी, वो भी लगातार 10000 वर्षों तक, अब प्रश्न यह उठता है कि इतनी विकसित अर्थव्यवस्था के पीछे कोई ना कोई अर्थव्यवस्था का मॉडल तो अवश्य रहा होगा। क्या था वह मॉडल? निश्चित रूप से वह आज कल चल रहा पूंजीवादी मॉडल तो नहीं रहा होगा, जो अँग्रेजों का थोपा हुआ है। इसको पूंजीवादी मॉडल इसलिए कहते हैं, क्योंकि इस मॉडल की सभी व्यवस्थाएँ इस बात को ऐसा बनाती हैं कि देश के सारे संसाधानों पर, शिक्षा व्यवस्था पर, न्याय व्यवस्था पर कुछ चंद लोगों का एकाधिकार हो जाये।

यह पूंजीवादी मॉडल अँग्रेजों के आने साथ ही भारत पर थोप दिया गया। अँग्रेजों के आने के पहले भारत में जो मॉडल चलता था, वह था अर्थव्यवस्था, न्याय व्यवस्था, शिक्षा व्यवस्था, फूड प्रोसेसिंग, गवर्नेंस, कृषि आदि का सनातन वैदिक मॉडल। इस सनातन मॉडल के कारण ही भारत लगातार 10000 वर्षों तक विश्व का नेता बना रहा। जिसमें आने के लिए दुनियाँ तरसती थी।

आजकल की पूंजीवादी शिक्षा व्यवस्था के मुकाबले कई गुना अच्छा थी, सनातन वैदिक गुरुकुलिया शिक्षा व्यवस्था। इस शिक्षा व्यवस्था में समाज का हर वर्ग गरीब हो, या अमीर सबके लिए शिक्षा बिलकुल निःशुल्क थी और भारत में साक्षरता की दर लगभग 100 प्रतिशत थी। आजकल की पूंजीवादी शिक्षा व्यवस्था, जहाँ व्यक्ति की रचनात्मकता को खत्म कर देती है, वहीं सनातन वैदिक शिक्षा व्यवस्था व्यक्ति की रचनात्मकता को नया अवसर देती है। इसी शिक्षा व्यवस्था के कारण भारत में कई महान वैज्ञानिक जैसे आर्यभट्ट, वराहमिहिर, ब्रम्हगुप्त, ऋषि कणाद, महर्षि पाणिनि आदि पैदा हुए। इस तरह न्याय व्यवस्था का सनातनी मॉडल भी विद्यमान था, जो सबको त्वरित, निशुल्क न्याय देता था, लेकिन आजकल की पूंजीवादी न्याय व्यवस्था केवल अमीरों की जरखरीद गुलाम बनी हुई है।

सनातन भारत में सबके लिए जमीन मुफ्त में उपलब्ध थी, जिसको भी सनातन टैक्सेशन सिस्टम द्वारा नियंत्रित किया जाता था, आजकल की जमीन की पूंजीवादी व्यवस्था ने गरीब, जंगल और जानवर से जमीन छीन ली है। गरीब, जंगल और जानवर के लिए आजकल की पूंजीवादी व्यवस्था में 2 गज जमीन भी नहीं है। इस तरह सनातन भारत में इन्वेस्टमेंट का मॉडल भी विद्यमान था, जो कि आजकल की पूंजीवादी इन्वेस्टमेंट मॉडल जैसे एफडी, शेयर्स आदि से कहीं ज्यादा अच्छा था। सनातन व्यवस्थाओं का मुख्य आधार परिवार व्यवस्था थी, जबकि पूंजीवादी मॉडल कहता है कि अधिक से अधिक लाभ कमाने के लिए परिवार व्यवस्था को तोड़ा जाए, ताकि आप हर चीज बाजार से खरीदें। जोमैटो और स्विगी जैसी कंपनियाँ इसलिए शुरू हुई हैं, ताकि आपको भोजन भी बाजार से खरीद कर खाना पड़े, आप बाजार से भोजन तभी खरीदोगे, अगर आपका परिवार टूट जाए। यहाँ पर हमने केवल इस बात को रखा है कि आजकल की पूंजीवादी व्यवस्था के विकल्प के रूप में एक बहुत अच्छा और well proven सनातन मॉडल भी उपलब्ध था।

कैसे बैंकों के कारण विश्व भर में महंगाई, बेरोजगारी आदि बढ़ी है और बैंक पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार हैं। हम अपने आने वाले लेखों के माध्यम से शेयर मार्केट को भी expose करेंगे कि कैसे शेयर मार्केट से पैसा नीचे से ऊपर मने गरीब से अमीर की तरफ जाता है। Information warfare, जिसके मुख्य साधन टीवी, अखबार, फिल्में आदि हैं, कैसे दुष्प्रचार करके पूंजीवादी व्यवस्था को आगे बढ़ाते हैं, इसको भी expose किया जाएगा। अंत में, मैं आपको यह बताना चाहूँगा कि अगर हम पूंजीवादी मॉडल के सामने सनातनी व्यवस्थाओं का विकल्प रखें, तो कैसे यह पूंजीवादी व्यवस्था ध्वस्त हो जाएगी। उदाहरण के लिए पहले पूंजीवादी चिकित्सा व्यवस्था एलोपैथी ही इलाज का एकमात्र साधन थी। जब हमने वैदिक सनातन आयुर्वेद का विकल्प लोगों के सामने रखा, तो एलोपैथी के पैर उखड़ने लगे। अभी तो एलोपैथी को पूर्ण सरकारी संरक्षण प्राप्त है। कुल हेल्थ बजट का लगभग 98 प्रतिशत एलोपैथी पर खर्च होने के बावजूद भी एलोपैथी आयुर्वेद के सामने टिक नहीं पा रही। इस तरह हमें एक–एक करके पूंजीवादी व्यवस्थाओं का सनातनी विकल्प लोगों के सामने रखना होगा। देर–सबेर जब लोग पूंजीवादी व्यवस्थाओं से दुखी होंगे, तो पूंजीवाद का किला ढह जाएगा और सनातन के सूर्य का पुण्य उदय होगा और सनातन सारे देशों में फैल जाएगा।

# भारत में धार्मिक पर्यटन छू रहा नित नई ऊचाईयाँ

प्रहलाद सबनानी

हाल ही के समय में भारत के नागरिकों में 'स्व' का भाव विकसित होने के चलते, देश में धार्मिक पर्यटन बहुत तेज गति से बढ़ा है। अयोध्या धाम में प्रभु श्रीराम के भव्य मंदिर में श्रीरामलला के विग्रहों की प्राण–प्रतिष्ठा के पश्चात प्रत्येक दिन औसतन 2 लाख से अधिक श्रद्धालु अयोध्या पहुँच रहे हैं। यह तो केवल अयोध्या की कहानी है, इसके साथ ही तिरुपति बालाजी, काशी विश्वनाथ मंदिर, उज्जैन में महाकाल लोक, जम्मू स्थित वैष्णो देवी मंदिर, उत्तराखंड में केदारनाथ, बद्रीनाथ, गंगोत्री एवं यमुनोत्री जैसे कई मंदिरों में श्रद्धालुओं की अपार भीड़ उमड़ रही है। भारत में धार्मिक पर्यटन में आई जबरदस्त तेजी के बदौलत रोजगार के लाखों नए अवसर निर्मित हो रहे हैं, जो देश के आर्थिक विकास को गति देने में सहायक हो रहे हैं।

जेफरीज नामक एक बड़ी अंतरराष्ट्रीय ब्रोकरेज कम्पनी ने बताया है कि अयोध्या में निर्मित प्रभु श्रीराम के मंदिर से भारत की आर्थिक सम्पन्नता बढ़ने जा रही है। दिनांक 22 जनवरी 2024 को अयोध्या में सम्पन्न हुए प्रभु श्रीराम मंदिर में प्राण–प्रतिष्ठा समारोह के बाद स्थानीय कारोबारी अपना उज्जवल भविष्य देख रहे हैं। अयोध्या धार्मिक पर्यटन का हब बनाने जा रहा है तथा अब अयोध्या दुनियाँ का सबसे बड़ा तीर्थ क्षेत्र बन जाएगा। धार्मिक पर्यटन की दृष्टि से अयोध्या दुनियाँ का सबसे बड़ा केंद्र बनने जा रहा है। जेफरीज के अनुसार अयोध्या में प्रति वर्ष 5 करोड़ से अधिक पर्यटक आ सकते हैं। अभी अयोध्या में केवल 17 बड़े होटल हैं, इनमें कुल मिलाकर 590 कमरे उपलब्ध हैं। लेकिन अब 73 नए होटलों का निर्माण किया जा रहा है। इनमें से 40 होटलों का निर्माण कार्य प्रारम्भ भी हो चुका है। अभी तक नए एयरपोर्ट, रेलवे स्टेशन, टाउनशिप और रोड कनेक्टिविटी में सुधार जैसे कामों पर 85,000 करोड़ रुपए का निवेश किया गया है। इस निवेश का स्थानीय अर्थव्यवस्था पर बड़ा असर दिखाई देने वाला है। शीघ्र ही अयोध्या वैश्विक स्तर पर धार्मिक और आध्यात्मिक पर्यटन केंद्र के रूप में उभरेगा। इससे होटल, एयरलाईन, हॉस्पिटलिटी, ट्रैवल, सीमेंट जैसे क्षेत्रों को बहुत बड़ा फायदा होने जा रहा है। भारत के विभिन्न शहरों से 1000 के आसपास नई रेल अयोध्या के लिए चलाए जाने के प्रयास किए जा रहे हैं। पूरे देश से दिनांक 23 जनवरी 2024 के बाद से प्रतिदिन भारी सँख्या में धार्मिक पर्यटक अयोध्या पहुँच रहे हैं। यह हर्ष का विषय है कि पहिले दिन ही 5 लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने प्रभु श्रीराम के दर्शन किए हैं।

विश्व के कई अन्य देश भी धार्मिक पर्यटन के माध्यम से अपनी अर्थव्यवस्थाएँ सफलतापूर्वक मजबूत कर रहे हैं। सऊदी अरब धार्मिक पर्यटन से प्रति वर्ष 22,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर अर्जित करता है। सऊदी अरब इस आय को आगे आने वाले समय में 35,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर तक ले जाना चाहता है। मक्का में प्रतिवर्ष 2 करोड़ लोग पहुँचते हैं, जबकि मक्का में गैर मुस्लिम के पहुँचने पर पाबंदी है। इसी प्रकार वेटिकन सिटी में प्रतिवर्ष 90 लाख लोग पहुँचते हैं। इस धार्मिक पर्यटन से अकेले वेटिकन सिटी को प्रतिवर्ष लगभग 32 करोड़ अमेरिकी डॉलर की आय होती है और अकेले मक्का शहर को 12,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर की आमदनी होती है। अयोध्या में तो किसी भी धर्म, मत, पंथ मानने वाले नागरिकों पर किसी भी प्रकार की पाबंदी नहीं होगी। अतः अयोध्या पहुँचने वाले श्रद्धालुओं की सँख्या 5 से 10 करोड़ तक प्रतिवर्ष जा सकती है। फिर अकेले अयोध्या नगर को होने वाली आय का अनुमान तो सहज रूप से लगाया जा सकता है। अभी अयोध्या आने वाले श्रद्धालु अयोध्या में रूकते नहीं थे, प्रातः अयोध्या पहुँचकर प्रभु श्रीराम के दर्शन कर शाम तक वापिस चले जाते थे, परंतु अब अयोध्या को इतना आकर्षक रूप से विकसित किया गया है कि श्रद्धालु 3 से 4 दिन रुकने का प्रयास करेंगे। एक अनुमान के अनुसार, प्रत्येक पर्यटक लगभग 6 लोगों को प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से रोजगार उपलब्ध कराता है। इस सँख्या के हिसाब से तो लाखों नए रोजगार के अवसर अयोध्या में उत्पन्न होने जा रहे हैं। अयोध्या के आसपास

विकास का एक नया दौर शुरू होने जा रहा है। यह कहना भी अतिश्योक्ति नहीं होगी कि अब अयोध्या के रूप में वेटिकन एवं मक्का का जवाब भारत में खड़ा होने जा रहा है।

धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से भारत सरकार ने भी धरातल पर बहुत कार्य सम्पन्न किया है। साथ ही अब इसके अंतर्गत एक रामायण सर्किट रूट को भी विकसित किया जा रहा है। इस रूट पर विशेष रेलगाड़ियाँ भी चलाए जाने की योजना बनाई गई है। यह विशेष रेलगाड़ी 18 दिनों में 8000 किलो मीटर की यात्रा सम्पन्न करेगी, इस विशेष रेलगाड़ी के इस रेलमार्ग पर 18 स्टॉप होंगे। यह विशेष रेलमार्ग प्रभु श्रीराम से जुड़े ऐतिहासिक नगरों अयोध्या, चित्रकूट एवं छतीसगढ़ को जोड़ेगा। अयोध्या में नवनिर्मित प्रभु श्रीराम मंदिर वैश्विक पटल पर इस रूट को भी रखेगा।

केंद्र सरकार द्वारा भारत में पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से लगातार किए जा रहे प्रयासों का परिणाम भी अब दिखाई देने लगा है। ''मेक माई ट्रिप इंडिया ट्रैवल ट्रेंड्स रिपोर्ट'' के अनुसार भारत के नागरिक अब पहले के मुकाबले अधिक यात्रा कर रहे हैं। भारत के नागरिकों द्वारा विशेष रूप से अयोध्या, उज्जैन एवं बदरीनाथ जैसे आध्यात्मिक स्थलों के बारे में अधिक जानकारी हासिल कर रहे हैं। उक्त जानकारी ''मेक माई ट्रिप'' के प्लेटफार्म के 10 करोड़ से अधिक सक्रिय उपयोगकर्ताओं से प्राप्त जानकारी के आधार पर सामने आई है। वर्ष 2019 के बाद से भारत में एक वर्ष में तीन से अधिक यात्राएँ करने वाले लोगों की सँख्या में 25 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई है। उक्त रिपोर्ट के अनुसार आध्यात्मिक पर्यटन संबंधी जानकारी हासिल करने की गतिविधियों में वर्ष 2021 की तुलना में वर्ष 2023 में 97 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई है। विशेष रूप से अयोध्या के संबंध में जानकारी हासिल करने संबंधी गतिविधियों में वर्ष 2022 की तुलना में वर्ष 2023 में 585 प्रतिशत की भारी वृद्धि दर्ज हुई है। इसी प्रकार उज्जैन एवं बदरीनाथ जैसे धार्मिक स्थलों के संबंध में भी जानकारी हासिल करने वाले नागरिकों की सँख्या में क्रमशः 359 प्रतिशत और 343 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई है। भारत में अब पारिवारिक यात्रा की बुकिंग भी बहुत तेज गति से बढ़ रही है। इसमें वर्ष 2022 की तुलना में वर्ष 2023 में 64 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई है। जबकि इसी अवधि में एकल यात्रा की बुकिंग में केवल 23 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है।

उक्त जानकारी को भारत के नागरिक विमानन मंत्रालय द्वारा जारी एक जानकारी से भी बल मिलता है कि भारत में घरेलू हवाई यातायात अब एक नए मुकाम पर पहुँच गया है। दिनांक 21 अप्रैल 2024 को रिकार्ड 4,71,751 यात्रियों ने 6,128 उड़ानों के माध्यम से भारत में हवाई सफर किया है। इसके पूर्व हवाई यातायात करने वाले नागरिकों की औसत सँख्या, कोरोना महामारी के पूर्व के खंडकाल में, 3,98,579 यात्रियों की थी। इसमें 14 प्रतिशत वृद्धि दर्ज की गई है। देश में धार्मिक पर्यटन में हो रही भारी वृद्धि के चलते भारत के सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर में भी तेजी दिखाई देने लगी है। वित्तीय वर्ष 2023–24 की तृतीय तिमाही के दौरान सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर ने भारत सहित विश्व के समस्त आर्थिक विश्लेशकों को चौंका दिया है। इस दौरान भारत में सकल घरेलू उत्पाद में 8.4 प्रतिशत की वृद्धि हासिल हुई है, जबकि प्रथम तिमाही के दौरान वृद्धि दर 7.8 प्रतिशत एवं द्वितीय तिमाही के दौरान 7.6 प्रतिशत की रही थी। पिछले वर्ष इसी अवधि के दौरान वृद्धि दर 4.4 प्रतिशत रही थी। जबकि अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष एवं विश्व बैंक ने वित्तीय वर्ष 2023–24 में भारत के सकल घरेलू उत्पाद में 6.3 प्रतिशत की वृद्धि दर का अनुमान लगाया था। इसी प्रकार क्रेडिट रेटिंग एजेंसी इकरा ने 6.5 प्रतिशत, एशिया विकास बैंक एवं बार्कलेस एवं प्राइस वॉटर कूपर्स ने 6.7 प्रतिशत, डेलाईट इंडिया ने 7 प्रतिशत की वृद्धि दर का अनुमान लगाया था; परंतु समस्त विदेशी संस्थानों के अनुमानों को झुठलाते हुए भारत का आर्थिक विकास दर लगभग 8 प्रतिशत की रही है। यह सब देश में लगातार बढ़ते धार्मिक पर्यटन एवं विभिन्न त्योहारों तथा शादी जैसे समारोहों पर भारतीय नागरिकों द्वारा दिल खोलकर पैसा खर्च करने के चलते सम्भव हो पा रहा है। इससे त्योहारों एवं शादी के मौसम में व्यापार के विभिन्न क्षेत्रों में अतुलनीय वृद्धि दृष्टिगोचर होती है। जैसे दीपावली त्योहार के समय भारत में नागरिकों के बीच विभिन्न नए उत्पादों की खरीद के लिए जैसे आपस में होड़ सी लग जाती है। भारत में लाखों करोड़ रुपए का व्यापार दीपावली त्योहार के समय में होता है। इसी प्रकार की स्थिति शादियों के मौसम में भी पाई जाती है। संभवतः विदेशी वित्तीय संस्थान भारत में हो रहे इस तरह के उक्त वर्णित परिवर्तनों को समझ नहीं पा रहे हैं एवं केवल पारंपरिक विधि से ही सकल घरेलू उत्पाद को आंकने का प्रयास कर रहे हैं। इसलिए भारत की विकास दर के संबंध में विभिन्न विदेशी संस्थानों के अनुमान गलत साबित हो रहे हैं।

# मुस्लिम तुष्टिकरण के लिए किसी भी सीमा तक जाएंगे राजनीतिक दल

मृत्युंजय दीक्षित

लोकसभा चुनावों के मतदान के दो चरण समाप्त हो जाने के बाद सभी राजनीतिक दलों को जनता के मध्य अपनी स्थिति की वास्तविकता का कुछ सीमा तक पता चल गया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में लगातार तीसरी बार सत्ता में आने की सम्भावना वाली भारतीय जनता पार्टी को रोकने के लिए विपक्ष ने एक बार फिर मुस्लिम तुष्टीकरण का विकृत खेल खेलना प्रारम्भ कर दिया है। तथाकथित इंडी गठबंधन में शामिल दलों के नेता लगातार भड़काऊ और नफरत भरी बयानबाजी कर रहे हैं, जिसमें अब वोट जिहाद और तालिबान भी आ गया है। दिल्ली के मंडी हाउस इलाके में पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के साथ, आतंकी फंडिंग मामले में सजा काट रहे, यासिन मलिक का फोटो लगाया गया है। पोस्टर में यासिन मलिक की रिहाई के साथ कॉंग्रेस को वोट देने की अपील की गई है। हालांकि जानकारी मिलते ही दिल्ली पुलिस ने यह पोस्टर हटा दिया है। आतंकी यासीन मलिक कुख्यात अलगवावादी है, जिससे 2006 में पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने मुलाकात की थी। अब मलिक आजीवन कारावास की सजा काट रहा है और अभी उस पर कई और मुकदमे चल रहे हैं। कॉंग्रेस केरल में प्रतिबंधित पीएफआई जैसे संगठनों का सहयोग ले रही है और सनातन विरोधी बयानों पर चुप्पी साधे हुए है।

मुस्लिम तुष्टीकरण का यह खुला खेल कॉंग्रेस ही नहीं, अपितु भारत की सभी वामपंथी और अधिकांश क्षेत्रीय पार्टियाँ जमकर खेल रही हैं, फिर चाहे वो उत्तर प्रदेश, बिहार या पश्चिम बंगाल हो। विगत 10 वर्षों और अटल जी के कार्यकाल को छोड़ दें, तो केंद्र तथा राज्यों में कॉंग्रेस व उसके गर्भ से निकले दलों व नेताओं ने ही सत्ता पर एकछत्र राज किया। ये सभी धर्मनिरपेक्षता के नाम पर भाजपा को हराने की बात करने वालों तथा कट्टरपंथियों का समर्थन कर मतदान को मजहब के आधार पर प्रभावित किया करते थे। भाजपा द्वारा धर्मनिरपेक्षता की सच्ची रेखा खींचने के बाद इन दलों के नेताओं के सामने अपना राजनीतिक अस्तित्व बचाने का संकट खड़ा हो गया है और ये वोट जिहाद की अपील कर रहे हैं। उत्तर प्रदेश में अभी तक सपा, बसपा, कॉंग्रेस सहित विभिन्न दल अतीक अहमद, मुख्तार अंसारी जैसे माफियाओं को अपने राजनीतिक लाभ के लिए पाला पोसा करते थे, अब उनके लिए फातिहा पढ़ रहे हैं और धूर्तता के साथ उन्हें गरीबों का मसीहा बताकर मुसलमानों के वोट मांग रहे हैं। पहले ये माफिया बूथ लूटकर व मतदान के समय बम, गोलियाँ दागकर वोट जिहाद किया करते थे, अब उनके नेता व गुर्गे इनको शहीद बताकर मुस्लिम समाज को भड़का रहे हैं।

उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद के कायमगंज के अल्पसँख्यक बहुल क्षेत्र में इंडी गठबंधन के प्रत्याशी के समर्थन में पूर्व विदेश मंत्री सलमान खुर्शीद की भतीजी सपा नेता मारिया आलम खां ने वोट जिहाद का नारा देकर समाजवादियों की मुश्किल बढ़ा दी है। मारिया आलम खां ने कहा कि हर महिला और हर पुरुष वोट जिहाद करके संविधान बचाने की इस जंग को लड़ेगा। प्रदेश में वोट जिहाद शब्द को लेकर राजनीतिक बयानबाजी अब काफी तल्ख हो गयी है। सपा, कॉंग्रेस गठबंधन हो जाने के कारण इस बार सलमान खुर्शीद का परिवार चुनावी मैदान से भले ही दूर हो गया हो, किंतु अपने सहयोगी दलों के उम्मीदवारों के लिए चुनाव प्रचार कर रहा है। सलमान खुर्शीद का परिवार कई बार विवादों के घेरे में रहा है। खुर्शीद की पत्नी लुईस खुर्शीद पर दिव्यांगों की सहायता करने के नाम पर घोटाला करने का मुकदमा चल रहा है। सलमान खुर्शीद बाटला हाउस एनकाउंटर व प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पर भी विवादित बयानबाजी कर चुके हैं। जब लुईस खुर्शीद को इस बात का आभास हो गया था कि इस बार उनके परिवार को टिकट नहीं मिलने जा रहा, तब उन्होंने मीडिया के सामने अपने

कार्यकर्ताओं से कहा था कि अगर काँग्रेस का कोई पदाधिकारी उनसे मिलने आए, तो उसे चप्पल से मारें। अब उसी परिवार की भतीजी मारिया एक बार फिर वोट जिहाद की अपील कर रही हैं।

इसी प्रकार उत्तर प्रदेश के संभल से पूर्व सांसद डॉ. शफीकुर्रहमान वर्क के पोते एवं सपा प्रत्याशी जियाउर्रहमान वर्क अपनी नुक्कड़ सभा के वायरल वीडियो में मुख्तार अंसारी, अतीक अहमद और शहाबुद्दीन की मौत को कुर्बानी बता रहा है। वीडियो वायरल हो जाने के बाद वर्क पर मुकदमा दर्ज हो गया है। उसके बाद भी वह नहीं रुका और उसने चुनाव आयोग के अधिकारियों को धमकी देते हुए बयान दिया कि जब वक्त बदलेगा, तब बदला लिया जाएगा। बहुजन समाजवादी पार्टी अपनी नैया पार लगाने व जनता के मध्य अपनी उपस्थिति को दर्ज कराने के लिए चुनावी मैदान में अपने युवा कोआर्डिनेटर, पूर्व मुख्यमंत्री मायावती के भतीजे आकाश आनंद के नेतृत्व में रण में उतरी है और कुछ–कुछ बदली–बदली सी नजर आ रही है। पार्टी ने 2022 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों में अपनी जमीन को फिर से प्राप्त करने और सवर्णो को खुश करने के लिए रामनाम का विरोध नहीं किया था, किंतु वह अब काफी पीछे छूट चुका है। बसपा ने इस बार नया नारा दिया है, "बहुजन हिताय बहुजन सुखाय का" किंतु पार्टी का एक

मुश्त मुस्लिम मतों का लालच छूटा नहीं है, इसलिए बसपा ने सबसे अधिक मुसलमानों को अपना उम्मीदवार बनाया है। बसपा के युवा नेता आकाश आनंद मुस्लिम तुष्टीकरण के लिए आक्रामक बयानबाजी कर रहे हैं, जिसके कारण उनके खिलाफ सीतापुर जिले में केस भी दर्ज हो गया है। सीतापुर की एक जनसभा में आकाश ने अपनी सभी सीमाओं को लांघते हुए उत्तर प्रदेश सरकार की तुलना तालिबान से कर डाली। अतीक, मुख्तार अंसारी व शहाबुद्दीन जैसे माफियाओं का राजनीतिक लाभ के लिए उपयोग बसपा ने भी समय–समय पर किया है। यह साबित हो जाने के बाद भी कि कुख्यात माफिया मुख्तार अंसारी की मौत प्राकृतिक कारणों से हुई है, इन सभी दलों के नेताओं ने न केवल फातिहा पढ़ना जारी रखा है, बल्कि उसकी मौत के नाम पर मुस्लिम तुष्टीकरण के भी सभी हथकंडे अपना रहे हैं। सपा, बसपा, काँग्रेस सहित इंडी गठबंधन में शामिल दलों के लोग जिस प्रकार भाषणबाजी कर रहे हैं, उससे इनकी घबराहट साफ है। मुस्लिम तुष्टीकरण के दम पर सरकार बनाने और चलाने वालों को एक ही आस है कि मोदी सरकार से बिजली, पानी, गैस, शौचालय, घर, दवाई, राशन सब कुछ लेने के बाद भी मुसलमान वोट मजहब के नाम पर ही करेगा।

ymritvsk1973@gmail.com

# श्रीराम महोत्सव कार्यक्रम

आज दिनाँक 17–04–2024 को सांयकाल 4 बजे ऊँचा गाँव प्रखंड के खंड खानपुर नगर के प्राचीन शिव मंदिर में विश्व हिंदू परिषद द्वारा आयोजित श्रीरामोत्सव कार्यक्रम में नगर के कार्यकर्ताओं के साथ विश्व हिंदू परिषद के जिला सहमंत्री शिवम् घंसल जी, उपेंद्र राघव जी पूर्व विभाग अध्यक्ष, प्रीतम जी प्रखंड मंत्री, रवि जी खंड संपर्क प्रमुख आरएसएस, दुष्यंत जी खंड शारीरिक प्रमुख आरएसएस, आदित्य जी प्रखंड संयोजक ऊंचा गाँव उपस्थित रहे। सभी ने श्रीराम मंदिर आंदोलन से लेकर श्रीरामलला के अयोध्या में भव्य–दिव्य मंदिर में प्राण–प्रतिष्ठा तक के संघर्ष का इतिहास एवं भगवान श्री राम के आदर्श जीवन पर प्रेरणादायक विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन प्रखंड मंत्री प्रीतम जी द्वारा हुआ।

प्रस्तुति : दीपक अग्रवाल

ललित गर्ग

## विरासत टैक्स एवं निजी सम्पत्ति सर्वे पर

# संकट में घिरी कांग्रेस

लोकसभा चुनाव में कॉंग्रेस जनता के बीच जिस तरह के मुद्दों को लेकर चर्चा में है, उनमें देश के विकास से अधिक मुफ्त की रेवड़ियाँ बांटने या अतिश्योक्तिपूर्ण सुविधा देने की बातें हैं, तो 'विरासत टैक्स' के नाम पर जनता की गाढ़ी कमाई को हड़पने के सुझाव हैं। ऐसी विरोधाभासी सोच एवं योजनाएँ कॉंग्रेस की अपरिपक्व एवं स्वार्थप्रेरित राजनीति को ही उजागर करती है। इंडिया ओवरसीज कॉंग्रेस के अध्यक्ष एवं राहुल गाँधी के विश्वस्त सलाहकार सैम पित्रोदा ने चुनावी समर में अपने ताजा बयान में विरासत टैक्स की वकालत की है। उन्होंने अमेरिका में लागू इस टैक्स की पैरवी करते हुए भारत के लिए उपयोगी बताया। सैम ने अपने बयान पर विवाद बढ़ता देख सफाई दी है, तो कॉंग्रेस ने इस बयान से खुद को अलग कर लिया है। लेकिन राजनीति की इन कुचालों एवं ऐसे बयानों में कॉंग्रेस का इरादा जनता की मेहनत की कमाई की संगठित लूट और वैध लूट ही नजर आता है। सैम पित्रोदा के बयान में कॉंग्रेस की सोच एवं संकल्प ही नहीं दिखा, बल्कि कॉंग्रेस की भावी योजनाओं की परतें भी खुली हैं। भले ही इस बयान ने कॉंग्रेस के लिए मुश्किलें बढ़ा दी हों, लेकिन जनता को मूर्ख समझ हर बार हंगामा खड़ा करना, कॉंग्रेस की नीति एवं नियत रही है। सैम ऐसे ही विवादास्पद बयानों से पूर्व में भी चर्चा में रहे हैं।

अमेरिका में विरासत टैक्स जैसी अनेक स्थितियाँ एवं कानून हैं, जो भारत में नहीं है, क्योंकि हर देश की अपनी स्थितियाँ होती हैं। सैम के इस बयान ने इसलिए तूल पकड़ लिया, क्योंकि कॉंग्रेस ने अपने घोषणा पत्र में लोगों की संपत्ति के सर्वे का वादा किया है। इसकी व्याख्या भाजपा पहले से ही इस रूप में कर रही है कि कॉंग्रेस लोगों की संपत्ति का आकलन करके संपन्न–सक्षम लोगों की संपदा का एक हिस्सा लेने का इरादा रखती है। चूंकि सैम पित्रोदा का कथन कुछ इसी ओर संकेत करता दिख रहा था, इसलिए भाजपा ने नए सिरे से उनके बयान को मुद्दा बना दिया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने तो कहा कि जब तक आप जीवित रहेंगे, तब तक कॉंग्रेस आपको ज्यादा टैक्स से मारेगी और जब जीवित नहीं रहेंगे, तब आप पर विरासत का बोझ लाद देगी।' कॉंग्रेस की लूट जिन्दगी के साथ भी और जिन्दगी के बाद भी कह कर, मोदी ने कॉंग्रेस को निशाने पर लिया है। गृह मंत्री अमित शाह ने भी यह कह दिया कि यदि कॉंग्रेस वैसा कुछ करने का नहीं सोच रही है, जैसा सैम पित्रोदा कह रहे हैं, तो वह अपने घोषणा पत्र से संपत्ति के सर्वेक्षण वाली बात हटाए।' निश्चित ही कॉंग्रेस की संपत्ति के सर्वेक्षण की बात में गहरे अर्थ, संदेह एवं शंकाएँ निहित हैं। राजनेताओं के बयानों पर राजनीति होना लोकतंत्र का एक हिस्सा है, लेकिन जनता के हितों पर आघात करना दुर्भाग्यपूर्ण है। लोकतन्त्र में सतत् रूप से अमीर–गरीब का विमर्श चलता रहता है, गरीबों के हित की बात करके अधिसँख्य मतदाताओं को लुभाना राजनीतिक चतुराई है, लेकिन जनता को बांटना एवं अलग–अलग खेमों में खड़ा करना, लोकतंत्र को कमजोर करता है। मगर भारत का मतदाता अब इतना सुविज्ञ एवं समझदार है कि वे राजनेताओं की मंशा को समझकर उस समय आगे बढ़कर नेतृत्व खुद संभाल लेते हैं, जब नेतागण अपना पथ भूल जाते हैं। भारत के चुनावों का इतिहास इसका गवाह रहा है। इसलिए राजनीतिक विमर्श चाहे जितना गर्त में चला जाए, मगर मतदाता की

सूझबूझ, जागरूकता एवं विवेक कभी मंद नहीं पड़ती।

भले ही सैम पित्रोदा अमेरिका का उदाहरण देकर उस पर भारत में बहस की जरूरत जता रहे थे, लेकिन उन्हें गलत समय में ऐसा उदाहरण नहीं देना चाहिए था, जो तथ्यात्मक रूप से पूरी तरह भारत की परिस्थितियों के लिए सही न हो और जिसके विवाद का विषय बनने की भरी–पूरी संभावनाएँ हों। यह तो कॉंग्रेस ही जाने कि वह संपत्ति के सर्वे के जरिए क्या हासिल करना चाहती है, लेकिन इससे इन्कार नहीं कि देश में आर्थिक असमानता कम करने की आवश्यकता है। इसके बाद भी इस आवश्यकता की पूर्ति न तो वामपंथी सोच वाले तौर–तरीकों से की जा सकती है और न ही उन उपायों से, जो समाज में विभाजन पैदा करें। जो भी निर्धन–वंचित हैं, या सामाजिक–आर्थिक रूप से पिछड़े हैं, उनके उत्थान की अतिरिक्त चिंता की जानी चाहिए, लेकिन बिना उनका जाति, मजहब देखे, बिना विभाजन की राजनीति किए।

सैम पित्रोदा, राजनीति की दुनियाँ में यह नाम कोई नया नहीं है, कॉंग्रेस के शासन में तकनीकी एवं आधुनिक विकास के वे पुरोधा रहे हैं। इंदिरा गाँधी, राजीव गाँधी और मनमोहन सिंह के सलाहकार रह चुके पित्रोदा इस समय राहुल के खास लोगों में से एक हैं। पित्रोदा अपने काम से कम, अपने बयानों के चलते ज्यादा चर्चे में रहते हैं। उनके बयान अक्सर कॉंग्रेस के लिए भी सरदर्द बनते रहे हैं। पित्रोदा के अनेक बयान पहले भी विवाद एवं कॉंग्रेस के सिरदर्द की वजह बन चुके हैं। साल 2019 में ही उन्होंने एक टीवी इंटरव्यू में कहा कि मिडिल क्लास को स्वार्थी नहीं होना चाहिए। उन्हें अधिक से अधिक टैक्स देने के लिए तैयार रहना चाहिए। मध्यमवर्गीय परिवार को रोजगार और अधिक अवसर मिलेंगे। इस बयान ने भी कॉंग्रेस की मुश्किलें बढ़ाई थीं और पार्टी को डैमेज कंट्रोल करना पड़ा था। पित्रोदा यहीं नहीं रुके, उन्होंने 2019 के ही पुलवामा हमले पर कहा था कि ऐसे हमले तो होते रहते हैं, मुंबई में भी हमला हुआ था। निश्चित ही कॉंग्रेस के शासन में ऐसे हमले एवं साम्प्रदायिक दंगे होते ही रहते थे। उन्होंने बालाकोट एयर स्ट्राइक ऑपरेशन पर सबूत मांगे थे।

सैम पित्रोदा के बयान एवं कॉंग्रेस के घोषणा पत्र के निजी सम्पत्ति सर्वे की बात में अवश्य ही रिश्ता है, जिसने पूरे देश के सामने कॉंग्रेस का मकसद स्पष्ट कर दिया है कि निजी संपत्ति का सर्वे कर निजी संपत्ति को सरकारी खजाने में डालकर वह इस धन को अपने वोट बैंक में बांटना चाहती है। ऐसी योजना यूपीए सरकार में तय भी हुई थी कि देश के संसाधनों पर पहला अधिकार अल्पसँख्यक और उसमें भी सबसे अधिक मुस्लिमों का है, उस प्रकार से कॉंग्रेस की यह मुसलमानों को लुभाने एवं उन्हें लाभ पहुँचाने की अघोषित चुनावी घोषणा है, इस तरह की घोषणाएँ लोकतंत्र में सुशासन एवं राजनीति मूल्यों को धुंधलाने की कुचेष्टा ही कही जायेगी। लोकतांत्रिक व्यवस्था में नेता बादशाह नहीं होता, बल्कि साधारण मतदाता बादशाह होता है, क्योंकि उसके ही एक वोट से सरकारें बनती और बिगड़ती हैं। मतदाता को जो मूर्ख समझते हैं, उनसे बड़ा मूर्ख दूसरा नहीं होता। ऐसे तथाकथित बयानों से भारत में संसदीय प्रणाली का लोकतंत्र कभी भी प्रभावित नहीं होगा, वह सफल रहा है और रहेगा, क्योंकि भारत के लोग अनपढ़ व गरीब हो सकते हैं, मगर वे अज्ञानी या मूर्ख नहीं हैं। उनका व्यावहारिक ज्ञान बहुत मजबूत होता है और वे राजनीतिक दलों के भ्रम में नहीं आने वाले, गुमराह नहीं होने वाले। यह सच है कि जब से भारत में जातिवादी, क्षेत्रवादी, भाषावादी, वर्गवादी व सम्प्रदायवादी राजनीति का बोलबाला हुआ है, तभी से राजनीति के विमर्श में गिरावट आनी शुरू हुई है, लेकिन इस गिरावट को संभालने के लिए मतदाता को अधिक परिवक्व एवं समझदार होने की अपेक्षा है।

# हनुमान जन्मोत्सव पर विहिप, बजरंग दल द्वारा भव्य रथ यात्रा आयोजित

23 अप्रैल हनुमान जन्मोत्सव पर विश्व हिंद परिषद, बजरंग दल श्री मुक्तसर साहिब जिला (बठिंडा विभाग) द्वारा भव्य रथ यात्रा निकाली गयी। रथ यात्रा श्री मन्न धाम मंदिर रेलवे रोड से श्री महादेव मंदिर, बैंक रोड तक रही। भव्य रथ पर चांदी के हनुमान जी विराजमान थे। श्री मन्न धाम मंदिर में पूजा अर्चना कर विहिप पंजाब प्रांत कार्याध्यक्ष सरदार हरप्रीत सिंह गिल जी, प्रांत उपाध्यक्ष ब्रजलता शर्मा जी ने शुभारंभ किया। इस रथ यात्रा में बड़ी सँख्या में युवा माता–बहनें उपस्थित रहीं। आर्मी बैंड एवं घोड़े पर सवार कार्यकर्ता यात्रा की शोभ बढ़ा रहे थे। पूरे शहर में बजरंग दल द्वारा दो

क्विंटल गुलाब के फूल की वर्षा की गई। भव्य रथ यात्रा का जगह–जगह पुष्प वर्षा के साथ जलपान करा कर भव्य स्वागत किया गया।

विहिप पंजाब प्रांत कार्याध्यक्ष सरदार हरप्रीत सिंह गिल जी ने कहा कि इस प्रकार की यात्राएँ समाज का मनोबल बढ़ाती हैं, समाज को जोड़ती हैं, समाज में सामूहिकता लाती हैं, संस्कार श्रद्धा लाती हैं, बठिंडा विभाग संगठन मंत्री साहिल वालिया जी, मुक्तसर जिला अध्यक्ष राजेंद्र खुराना जी, जिला मंत्री पवन खुराना जी, जिला संयोजक बजरंग दल अभी डाबरा जी, सुनील नागपाल जी, जीवन शर्मा आदि सैकड़ों कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

# प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार के लिए वोट करें, राष्ट्र के लिए वोट करें

**पंकज जगन्नाथ जायसवाल**

जैसे–जैसे मतदान प्रक्रिया आगे बढ रही है, राजनीतिक प्रचार का उत्साह दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। क्षेत्रीय और राष्ट्रीय दलों ने अपनी विचारधारा के आधार पर घोषणापत्र जारी किए हैं और कई दलों ने वोट बैंक की राजनीति, स्वार्थी राजनीतिक और वंशवादी एजेंडे को प्राथमिकता दी है। जाति, मुद्रास्फीति और वर्तमान सरकार के फिर से चुने जाने पर देश के लिए संभावित जोखिमों के झूठे विमर्श पर मतदाताओं को धोखा देने के लिए फर्जी आख्यान गढ़े जा रहे हैं। विपक्ष विशेष रूप से वंशवादी, हताश हैं और वे समझते हैं कि यदि वे इस चुनाव में अच्छा प्रदर्शन नहीं करते हैं, तो जल्दी ही उनका राजनीतिक प्रभुत्व खत्म हो जायेगा। ऐसा लगता है कि उनके पास कोई राष्ट्रीय एजेंडा नहीं है, इसके बजाए वे अपने अस्तित्व और व्यक्तिगत लाभ के लिए संघर्ष कर रहे हैं। ऐसा करने के लिए वे विभिन्न मीडिया और जमीनी स्तर पर गंदे खेल खेल रहे हैं। फर्जी मुफ्त वादे, हिंदुओं के बीच जाति विभाजन, स्थानीय मुद्दे, उत्तर –दक्षिण विभाजन, संवैधानिक परिवर्तन के बारे में एक झूठी कहानी, खतरे में लोकतंत्र के बारे में एक झूठी कहानी और इस तरह के अन्य आख्यानों का इस्तेमाल देश भर में जनता को धोखा देने के लिए नियमित रूप से किया जा रहा है। भाजपा को छोड़कर कोई भी पार्टी बहुमत हासिल करने के लिए चुनाव नहीं लड़ रही है। इस बात पर विचार करें कि क्या हमें खंडित जनादेश के लिए मतदान करना चाहिए, जो देश को अस्थिर कर देगा ?

**'मुफ्त चीजें देश को कमजोर और गरीब बनाती हैं'** – विपक्ष द्वारा किए गए वादों के गंभीर नतीजों को समझें। हम वेनेजुएला, ग्रीस या श्रीलंका के नक्शेकदम पर नहीं चलना चाहते हैं, क्योंकि हम बहुत ज्यादा छूट देकर देश को प्रगति के मामले में एक सदी पीछे धकेल देंगे। मुफ्त की चीजें आम आदमी को लुभाने का सबसे खराब तरीका है। हमें सावधानी बरतनी चाहिए और लोगों को यह समझना चाहिए कि ये वादे समाज के हर वर्ग को तबाह कर देंगे और सभी को गरीबी, गुलामी और निराशा की राह पर ले जाएंगे। आइए हम थोड़ी–सी बचत करने के जाल में न फंसें, जो वास्तव में लंबे समय में हमारी बचत को खत्म कर देती है।

**'क्या संविधान खतरे में है ?'** – भाजपा के दोबारा चुने जाने पर डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर के संविधान में बदलाव की झूठी कहानी कॉंग्रेस नेताओं द्वारा किया जा रहा एक बड़ा मजाक है, जिनकी सरकारों ने केंद्र में सत्ता में रहते हुए 50 से अधिक संशोधन किए थे। दिवंगत प्रधानमंत्री राजीव गाँधी ने स्पष्ट रूप से संकेत दिया था कि कॉंग्रेस शासन जितनी बार आवश्यक होगा, संविधान में बदलाव करेगा। अब जबकि वर्तमान कॉंग्रेस नेता मोदी सरकार के खिलाफ झूठी कहानी गढ़ रहे हैं, तो मोदी सरकार ने अपने दस वर्षों के कार्यकाल में कितने संशोधन किए हैं ? वे वास्तव में डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर के सपनों को पूरा करने का प्रयास कर रहे हैं, जैसे वे कभी अनुच्छेद 370 नहीं चाहते थे, जिसे मोदी प्रशासन ने हटा दिया। वे एक समान नागरिक संहिता चाहते थे, जिसे मोदी सरकार के अगले कार्यकाल में लागू किया जाएगा। मोदी सरकार ने उन बदलावों को संबोधित किया है, जिनकी डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर ने गरीबों और वंचितों के लिए वकालत की थी और अगले कार्यकाल में अतिरिक्त प्रोत्साहन दिया जाएगा। ओबीसी, एससी, एसटी, एनटी और सामान्य वर्ग में आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए योजनाओं को उनके सामाजिक–आर्थिक विकास के लिए

हरसंभव समर्थन मिला है। जो प्रशासन डॉ. अंबेडकर की महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने का प्रयास कर रहा है, वह संविधान को कमजोर करने पर कैसे विचार कर सकता है ?

**'स्थानीय मुद्दों पर नहीं, राष्ट्रीय सरोकारों पर वोट करें'** – मतदाता विशिष्ट क्षेत्रों में स्थानीय मुद्दों के नामों से भ्रमित होते हैं, जैसे कि जल निकासी व्यवस्था। हमें स्पष्ट होना चाहिए : हम राष्ट्रीय सुरक्षा, अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति और संबंधों, सभी क्षेत्रों में सामाजिक–आर्थिक विकास और समाज और राष्ट्र के निर्माण के लिए सुधारों के लिए बेहतरीन नीतियों और कानूनों को लागू करने के लिए एक मजबूत, बौद्धिक और उत्पादक सांसद और प्रधानमंत्री के लिए मतदान कर रहे हैं। यदि प्रधानमंत्री कमजोर है और सरकार खंडित है, तो हम 2014 से पहले की स्थिति में लौट जाएंगे, जिसे न तो मोदी सरकार के समर्थक और न ही आलोचक फिर से देखना चाहते हैं। नतीजतन, एनडीए और इंडी गठबंधनों से सर्वश्रेष्ठ पीएम उम्मीदवार को वोट देना और उसका समर्थन करना महत्वपूर्ण है।

**'क्या लोकतंत्र खतरे में है?'** – विपक्ष एक ऐसा एजेंडा चलाने की कोशिश कर रहा है, जिसमें दावा किया जा रहा है कि अगर पीएम मोदी फिर से चुने गए तो देश में लोकतंत्र खत्म हो जाएगा। अगर हम गौर से देखें तो पीएम मोदी देश के सबसे सम्मानित प्रधानमंत्री और दुनियाँ के सबसे बड़े नेताओं में से एक हैं, जबकि भारत में उनके आलोचक भी उन्हें सबसे ज्यादा नापसंद करते हैं। हालांकि उन्होंने पिछले दस सालों में अपने विरोधियों के खिलाफ कभी कोई कार्रवाई नहीं की है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर उनका जिस तरह से मजाक उड़ाया जाता है, वैसा किसी और राजनेता का नहीं होता, लेकिन वह लोकतांत्रिक मूल्यों में विश्वास करते हैं और उन्होंने ऐसे लोगों या पार्टियों के खिलाफ कभी कोई कार्रवाई नहीं की है। तो अगर वह फिर से चुने गए तो लोकतंत्र को कैसे खतरा होगा ? राजनीतिक दलों और उनके नेताओं के बीच खौफ साफ तौर पर देखा जा सकता है, क्योंकि वह भ्रष्टाचार को बर्दाश्त नहीं करेंगे।

**'जाति के आधार पर नहीं, बल्कि सही प्रधानमंत्री उम्मीदवार को वोट दें'** – इन राजनेताओं द्वारा निभाई जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण भूमिका उम्मीदवार की जाति और संप्रदाय के आधार पर वोट देना है, जिससे वोट बंटेंगे और राष्ट्रीय हित और अखंडता को नुकसान पहुँचेगा, जिससे सही उम्मीदवारों की व्यवहार्यता प्रभावित होगी। हमें यह समझना चाहिए कि इस जाति–आधारित विचार प्रक्रिया ने हमें सामाजिक–आर्थिक रूप से बहुत नुकसान पहुँचाया है, जिसके परिणामस्वरूप कुछ शताब्दियों तक मुगल और ब्रिटिश नियंत्रण रहा, जिससे हम गरीब हो गए और एक औपनिवेशिक मानसिकता विकसित हुई, जो गुलामी में विश्वास करती है। क्या हम ये दिन वापस चाहते हैं? निश्चित रूप से ऐसा कोई नहीं चाहता, इसलिए जाति के बारे में भूल जाओ और उत्तम राष्ट्र और प्रधानमंत्री उम्मीदवार के लिए वोट करो। जाति की राजनीति से छुटकारा पाओ और राष्ट्र के लिए वोट करो।

**'नोटा का विकल्प क्यों नहीं?'** – भले ही नोटा का विकल्प उपलब्ध है, लेकिन इसकी अनुशंसा नहीं की जाती है। आपको प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार पर विचार करते समय 'उपलब्ध सर्वश्रेष्ठ' के लिए वोट करना चाहिए। भले ही आपको आपका स्थानीय उम्मीदवार पसंद न हो, लेकिन इस बारे में सोचें कि आप देश के प्रधानमंत्री के रूप में किसे चाहते हैं? एक बार जब आप प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार पर फैसला कर लेते हैं, तो नोटा का विकल्प चुनने के बजाए, उन्हें वोट देना आसान होता है। राजनीतिक व्यवस्था कुछ सालों में नहीं बदलेगी, पर्याप्त बदलाव के लिए कम से कम एक दशक लगेगा, इसलिए सांसद के बजाए प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार पर विचार करें। ध्यान रखें कि समाज और राष्ट्र के लिए कोई भी संकीर्ण सोच और दूरदर्शिता की कमी अंततः व्यक्तिगत आकांक्षाओं के साथ– साथ समाज और राष्ट्र को भी बर्बाद कर देगी। आइए हम अपनी जड़ों को विकसित करके अपने दृष्टिकोण को व्यापक बनाएँ, जो हमें फिर से बड़ा बना रही हैं और हम खुद को जल्द ही 'विश्वगुरु' के रूप में देखेंगे। आइए प्रधानमंत्री पद के उत्तम उम्मीदवार को वोट दें !!

pankajjayswal1977@gmail.com

# मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः

आचार्य राघवेंद्र दास

हम–आप या सामान्य जनमानस जीवन चक्र में सतत घूमने का कारण अपने कर्मों को मानते हैं और यह मोटे तौर पर ठीक भी है। किन्तु जैसे अकादमिक अध्ययन में जैसे–जैसे हम उच्च शिक्षा की ओर बढ़ते जाते हैं, वैसे–वैसे विषयों की सूक्ष्मता बढ़ती जाती है। ठीक–ठीक वैसे ही जीवन के संबंध में समझना चाहिए। वैसे तो आत्मज्ञान अथवा स्वस्वरूप की प्राप्ति में मन को जीतना अथवा अतिक्रमण करना नितांत आवश्यक है, किन्तु यह मन ही मोक्ष का कारण बन जाता है और बंधन का भी। इस संदर्भ में ब्रह्मबिन्दूपनिषद् का द्वितीय मंत्र द्रष्टव्य है–

***मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः।***
***बन्धाय विषयासक्तं मुक्त्यै निर्विषयं स्मृतम्।।***

अर्थात मन ही सभी मनुष्यों के बन्धन एवं मोक्ष का प्रमुख कारण है, विषयों में आसक्त मन बन्धन का और कामना–संकल्प से रहित मन ही मोक्ष का कारण कहा गया है। इस मन की दुष्करता की ही बात अर्जुन श्रीमद्भगवद्गीता में कहते हैं–

***चञ्चलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम्।***
***तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम्।।6.34।।***

अर्थात क्योंकि हे कृष्ण! मन बड़ा ही चञ्चल, प्रमथनशील, दृढ़ (जिद्दी) और बलवान् है। उसका निग्रह करना मैं वायु की तरह अत्यन्त कठिन मानता हूँ। आगे के श्लोकों में श्रीकृष्ण ने मन निग्रह के उपाय और फल बतलाये हैं। जिनमें कहा गया है कि अभ्यास और वैराग्य से उसे स्थित किया जा सकता है और मन निग्रह के बिना साधना फलीभूत नहीं होती। उपनिषद् और गीता के सूत्रों से एक भाव तो स्पष्ट है कि मन का निग्रह किए बिना अध्यात्मिक सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती। जहाँ गीता निग्रह की बात कहती है, वहीं उपनिषद् उसे कामना संकल्प रहित बनाने को कहता है। मन के संबंध में भिक्षुगीता के कुछ श्लोक अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। हिन्दू दर्शन में मन को संयमित करने के विविध उपाय बतलाए गए हैं। भिक्षु गीता के श्लोक भी मन के संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण और द्रष्टव्य हैं–

***नायं जनो मे सुखदुःखहेतुर्न देवतात्मा ग्रहकर्मकालाः।***
***मनः परं कारणमामनन्ति संसारचक्रं परिवर्तयेद् यत्।। (43)***

अर्थात मेरे (जीव) सुख अथवा दुःख का कारण न ये मनुष्य हैं, न देवता हैं, न शरीर है और न ग्रह, कर्म और काल आदि ही हैं। श्रुतियाँ और महात्मा जन, "मन" को इसका परम कारण बताते हैं और मन ही इस सारे संसार–चक्र को चला रहा है।

***मनो गुणान् वै सृजते बलीयस्ततश्च कर्माणि विलक्षणानि।***
***शुक्लानि कृष्णान्यथ लोहितानि तेभ्यः सवर्णाः सृतयो भवन्ति।।***

अर्थात मन बहुत बलवान है, इसी ने विषयों, उनके कारण गुणों और तत्सम्बन्धी वृत्तियों की सृष्टि की है। उन वृत्तियों के

अनुसार ही सात्त्विक, राजस और तामस, अनेक प्रकार के कर्म होते हैं और कर्मों के अनुसार ही जीव की विविध गतियाँ होती हैं।

***अनीह आत्मा मनसा समीहता हिरण्यमयो मत्सख उद्विचष्टे।***
***मनः स्वलिंगं परिगृह्य कामान् जुषन् निबद्धो गुणसंगतोसौ।।***

अर्थात मन ही समस्त चेष्टाएँ करता है, मन के साथ एकात्मता स्थापित करने पर भी आत्मा निष्क्रिय ही है, वह जीव का सनातन सखा है और अपने अलुप्त ज्ञान से सब कुछ देखता रहता है। उस अलुप्त ज्ञान की अभिव्यक्ति मन के द्वारा होती है, जब वह मन को स्वीकार करके उसके द्वारा विषयों का भोक्ता बन बैठता है, तब कर्मों के साथ आसक्ति होने के कारण वह उनसे बँध जाता है।

***दानं स्वधर्मो नियमो यमश्च श्रुतं च कर्माणि च सद्व्रतानि।***
***सर्वे मनोनिग्रहलक्षणान्ताः परो हि योगो मनसः समाधिः।।***

अर्थात दान, स्वधर्म पालन, यम, नियम, वेदाध्ययन, सत्कर्म और ब्रह्मचर्यादि श्रेष्ठ व्रत का आत्यांतिक व अंतिम फल मन की एकाग्रता में ही है और मन का एकाग्रचित्त होना ही परम योग है।

***समाहितं यस्य मनः प्रशान्तं दानादिभिः किं वद तस्य कृत्यम्।***
***असंयतं यस्य मनो विनश्यद् दानादिभिश्चेदपरं किमेभिः।।***

अर्थात जिस मनुष्य का मन शान्त और समाहित है, उसे दान आदि समस्त सत्कर्मों का फल प्राप्त हो चुका है, अब उसे कोई धार्मिक क्रिया करने की क्या आवश्यकता? और जिसका मन चंचल है अथवा आलस्य से अभिभूत हो रहा है, उसको इन दानादि शुभ कर्मों से अब तक कोई लाभ नहीं हुआ है। ऊपर उल्लिखित उपनिषद् और गीताओं के सूत्रों से यह तो स्पष्ट हो गया कि मन ही बंधन और मोक्ष का कारण है। जब वह बहिर्मुखी होता है, तो संताप, पीड़ा और नाना असह्य दुःखों से हमें आबद्ध करता है, किन्तु जब कोई निग्रही साधक उसका निग्रह कर अथवा भगवद् चरणों में उसे लगा देता है, तो वह परम शांति अथवा मोक्ष का कारण बन जाता है। वस्तुतः मन सभी इंद्रियों का स्वामी है, सभी इंद्रियाँ मन के वश में हैं, मन किसी के वश में नहीं है, मन बलवान से भी बलवान है। मध्यकाल के महान संत रविदास एक पद में बाह्य पूजा को निरर्थक बताते हुए, मन को ही ईश्वर को अर्पित करने का महान उपचार बतलाया है–

***राम मैं पूजा कहां चढ़ाऊं। फल अरु फूल अनूप न पाऊं।।***
***थनहर दूध जो बछरु जुठारी। पुहुप भंवर जल मीन बिगारी।।***
***मलयागिरि बेधियो भुजंगा। विष अम्रित दोउ एकै संगा।।***
***मन ही पूजा मन ही धूप। मन ही सेऊं सहज सरूप।।***
***पूजा अरचा न जानूं तेरी। कहि रैदास कवन गति मेरी।।***

# बच्चों के होली उत्सव ने रोटोरुआ को रोशन कर दिया

रविवार, 7 अप्रैल, 2024 को बच्चों की होली के जीवंत रंगों ने रोटोरुआ को रोशन कर दिया, क्योंकि परिवार और दोस्त रंगों के आनंदमय त्योहार का आनंद लेने के लिए एकत्र हुए। सुरम्य तियाकी अर्ली में मेजबानी की गई। हिनेमोआ पॉइंट, ओव्हाटा में लर्निंग सेंटर, इस सांस्कृतिक उत्सव ने एक महत्वपूर्ण घटना को एकता, हंसी और सांस्कृतिक आदान– प्रदान का अवसर के रूप में, चिह्नित किया उत्सव की शुरुआत टेरेसा के नेतृत्व में पारंपरिक माओरी कराकिया के साथ हुई, जिसने आध्यात्मिक माहौल तैयार किया। दिन के उत्सव के लिए स्वर. सुश्री श्वेता, रोटोरुआ हिंदी स्कूल की शिक्षिकाओं में से एक, ने बच्चों की होली के महत्व पर उत्साहपूर्वक अंतर्दृष्टि साझा की, जिससे उनका अनुभव समृद्ध हुआ। सभी 40 से अधिक उपस्थितगण उत्साही प्रतिभागियों ने खुशी के माहौल में खुद को डुबो लिया।

जैविक और हर्बल रंग के पाउडर और पानी छिड़कने की सदियों पुरानी परंपरा का आनंद ले रहे हैं। वातावरण में हंसी गूंज उठी और बच्चों व वयस्कों ने समान रूप से चंचल सौहार्दपूर्ण सृजन का आनंद उठाया तथा एकजुटता की स्मृतियों को संजोया। तियाकी अर्ली लर्निंग सेंटर ने उत्सव के लिए एक सुखद वातावरण प्रदान किया, जिसमें पर्याप्त सुविधाएं थीं, रंगों की जीवंत फुहारों के बीच बच्चों के मौज–मस्ती और खेलने के लिए जगह थी। सबसे ऊपर सुरक्षा के साथ प्राथमिकता, बाड़ से घिरे बाहरी क्षेत्र ने परिवारों को गले लगाने के लिए एक सुरक्षित वातावरण सुनिश्चित किया। माराए, रोटोरुआ झील और आसपास के आकर्षणों की खोज करते हुए होली की भावना हिनेमोआ की चट्टान, खुशियों से परे,

बच्चों की होली कई लोगों के लिए एक समृद्ध शैक्षिक यात्रा के रूप में काम करती है। उपस्थित लोगों ने माओरी परिवारों और पाकेहा परिवारों ने समान रूप से इसका अनुभव करने पर प्रसन्नता व्यक्त की। तियाकी अर्ली लर्निंग सेंटर की शिक्षिकाओं में से एक, दीपिका मगेसन ने टिप्पणी की, 'होली लाती है उमंग', जीवन के सभी क्षेत्रों के लोग एक साथ मिलकर मजेदार तरीके से समावेशिता को बढ़ावा दे रहे हैं।" जबकि रोटोरुआ होली महोत्सव 2010 में अपनी स्थापना के बाद से एक प्रिय सार्वजनिक कार्यक्रम रहा है। न्यूजीलैंड की हिंदू परिषद ने इस वर्ष बच्चों के उद्घाटन समारोह को चिह्नित किया। इस पहल का उद्देश्य पोषित परंपरा को युवा दर्शकों के सामने पेश करना, बढ़ावा देना है। सांस्कृतिक जागरूकता और अंतर–सांस्कृतिक आदान–प्रदान को बढ़ावा देना है। भारत में दीपावली के बाद का त्योहार, होली, दूसरी सबसे महत्वपूर्ण गहरा सांस्कृतिक महत्व रखता है, जो दुनियाँ भर के लोगों को प्रभावित करता है।

hindu.nz@gmail.com

# हिंदू धर्म में तिल का महत्व

डॉ. आनंद मोहन
सहयोगी - डॉ. अग्रताबेन वधेल, सबरीन बशीर, डॉ. आकांक्षा शुक्ला, आलोक मोहन

तिल के बीज हिंदू धर्म में एक बहुमुखी भूमिका निभाते हैं, जो विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक प्रथाओं के साथ जुड़े हुए हैं। तिल के बीज, जिन्हें हिंदी में 'तिल' और दक्षिण भारतीय भाषाओं में 'एलू' कहा जाता है, हिंदू धर्म में एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं, जो अमरता और शुभता दोनों का प्रतीक हैं। उनका उल्लेख प्राचीन हिंदू किंवदंतियों और वेदों में पाया जाता है, जहाँ उन्हें गहन आध्यात्मिक अर्थ के साथ चित्रित किया गया है। तिलतर्पणम जैसे अंतिम संस्कार अनुष्ठानों में, तिल के बीज एक आवश्यक घटक के रूप में महत्व रखते हैं, जो दिवंगत आत्मा की अमरता की यात्रा को दर्शाता है। इसके अलावा धार्मिक समारोहों में, हिंदू चावल के दानों के साथ काले और सफेद तिल मिलाते हैं, उन्हें देवताओं और पूर्वजों को श्रद्धा और कृतज्ञता के संकेत के रूप में चढ़ाते हैं। मकर संक्रांति के फसल उत्सव के दौरान, तिल के बीज केंद्र स्तर पर आ जाते हैं, दिव्य मूर्तियों के सामने पवित्र होने के बाद वितरित मिठाई में प्रमुखता से दिखाई देते हैं, जिससे दिव्य ऊर्जा का संचार होता है। इसके अतिरिक्त काले तिल का दान नकारात्मकता को दूर करके घरों और उनके निवासियों को शुद्ध करने के लिए माना जाता है।

हिंदू धर्म में एक अन्य मिथक के अनुसार, तिल के बीज को भगवान यम से एक दिव्य आशीर्वाद मिला, जो उन्हें अमरता के प्रतीकवाद के साथ इस धरती पर जीवन की समाप्ति करता है। यह विश्वास हिंदू धार्मिक प्रथाओं के भीतर तिल के बीज से जुड़ी श्रद्धा और महत्व को रेखांकित करता है। विशेष रूप से काले तिल के बीज दान करने का कार्य, जिसे महादान कहा जाता है, गहरा महत्व रखता है। यह मान्यता न केवल उदारता का प्रतीक है बल्कि घर और उसके सदस्यों को नकारात्मकता से मुक्त करने का भी कार्य करता है। यह परंपरा तिल के बीज की आध्यात्मिक शक्ति, भक्ति और दान के कार्यों में संलग्न लोगों के लिए आशीर्वाद और शुद्धि लाने की उनकी क्षमता में स्थायी विश्वास को दर्शाता है।

तिल की उत्पत्ति के बारे में हिंदू पौराणिक कथाओं के भीतर विभिन्न कथाएँ मौजूद हैं, जिनमें से एक का सुझाव है कि वे समुद्र मंथन, ब्रह्मांडीय महासागर के मंथन के दौरान भगवान विष्णु के पसीने से उभरे थे। तिल के बीज को दिव्य सार के साथ जुड़ा हुआ माना जाता है, जिसे भगवान विष्णु के शरीर का एक हिस्सा माना गया है। यह जुड़ाव उन्हें पवित्रता की भावना से भर देता है, जिससे हिंदू धर्म में उनका महत्व बढ़ जाता है। तिल को अक्सर देवताओं द्वारा धन्य किसी भी भोजन का शुद्धतम रूप माना जाता है, तिल के बीज हिंदू धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं के भीतर एक श्रद्धेय स्थिति रखते हैं। अनुष्ठानों, प्रसाद और पाक प्रथाओं में उनका समावेश परमात्मा से संबंध का प्रतीक है और उनकी आध्यात्मिक शक्ति और शुभता की याद दिलाता है। हिंदू पौराणिक कथाओं में सूर्य देवता को सभी जीवन और ऊर्जा के स्रोत के रूप में सम्मानित किया जाता है। तिल के बीज को सौर ऊर्जा की अभिव्यक्ति माना जाता है। नतीजतन मकर संक्रांति जैसे दिनों में तिल का सेवन करना सूर्य के सम्मान और आशीर्वाद लेने के तरीके के रूप में देखा जाता है। यह परंपरा जीवन को बनाए रखने और दुनियाँ को ऊर्जा प्रदान करने में सूर्य की महत्वपूर्ण भूमिका की मान्यता का प्रतीक है।

यज्ञ और होम जैसे अनुष्ठानों में तिल के बीज अक्सर पवित्र अग्नि में अर्पित किए जाते हैं, दिव्य आशीर्वाद का आह्वान करते हैं और पर्यावरण को शुद्ध करते हैं। तिल के तेल या बीजों को अर्जित करने का कार्य किसी के अहंकार और इच्छाओं को परमात्मा को आत्मसमर्पण

करने, आध्यात्मिक ज्ञान और आंतरिक परिवर्तन को बढ़ावा देने का प्रतीक है। अनुष्ठानों से परे, तिल के बीज रोजमर्रा की प्रथाओं में उपयोगी होते हैं, जैसे कि उनके साथ पानी पीना, तिल–संक्रमित पानी से स्नान करना और शरीर में तिल का तेल लगाना, सभी पापों की सफाई और आध्यात्मिक शुद्धि को बढ़ावा देने में मदद करते हैं। तिल के तेल के लैंप, जिन्हें 'तिल तेल के दीया' के रूप में जाना जाता है, दिवाली के दौरान अंधेरे को दूर करने और ज्ञान, समृद्धि के प्रकाश में प्रवेश करने के लिए जलाए जाते हैं। तिल के तेल का उपयोग पारंपरिक मालिश उपचारों में भी किया जाता है, माना जाता है कि यह शारीरिक कल्याण और आध्यात्मिक सद्भाव को बढ़ावा देता है। स्नान करने से पहले शरीर पर तिल का तेल लगाने का अनुष्ठान, जिसे 'अभ्यंग स्नान' के रूप में जाना जाता है, आत्मा को शुद्ध करने और नकारात्मक ऊर्जाओं को दूर करने के लिए माना जाता है।

**तिल का औषधि अवलोकन** – आदिम काल से तिल को एक आसन्न फसल के रूप में जाना जाता है, जिसका उपयोग इसके औषधीय गुणों के लिए किया जाता है। तिल के बीज में महत्वपूर्ण एंटीऑक्सीडेंट गतिविधि होती है, इसलिए उन्हें सामान्य आहार में शामिल किया जाता है, जो एक प्राकृतिक एंटीऑक्सिडेंट के रूप में लाभ दे सकते हैं। एक अध्ययन ने यह भी संकेत दिया है कि तिल में फिनोल और फ्लेवोनोइड्स की उच्च मात्रा की उपस्थिति एंटीऑक्सिडेंट और एंटीप्रोलिफेरेटिव गुणों के लिए जिम्मेदार है और कहा गया है कि सफेद तिल के बीज पुरानी बीमारियों को रोकने के लिए कार्यात्मक खाद्य पदार्थों के संभावित स्रोत हैं। तिल में पाए जाने वाले सेसमिन, सेसमोलिन और मिरिस्टिक एसिड में एंटीऑक्सीडेंट गुण होते हैं। जब उच्च तापमान के अधीन किया जाता है, तो सेसमिन और सेसमिनोल, सेसमोल में परिवर्तित हो जाता है, जो एक अधिक शक्तिशाली एंटीऑक्सिडेंट है। तिल को भूनने से न केवल भूरा रंग बढ़ता है, बल्कि एंटीऑक्सीडेंट गतिविधि भी बढ़ती है।

तिल के बीज पॉलीअनसेचुरेटेड फैटी एसिड की उच्च मात्रा की उपस्थिति के कारण लिपिड चयापचय से संबंधित विकारों को कम करते हैं। तिल में मौजूद मोनोअनसैचुरेटेड फैटी एसिड और पॉलीअनसेचुरेटेड फैटी एसिड अच्छे प्रकार के वसा होते हैं, जो कोलेस्ट्रॉल को कम करने में मदद करते हैं। वे संतृप्त वसा में कम हैं। लेसिथिन और लिग्नान भी कोलेस्ट्रॉल के उत्पादन को रोकते हैं। इसके अलावा विटामिन ई और फ्लेवोनोइड्स स्वाभाविक रूप से तिल में पाए जाते हैं, लिपिड–कम करने वाले गुणों के लिए जाने जाते हैं। अल्बिनो चूहों पर किए गए एक अध्ययन में कुल कोलेस्ट्रॉल के स्तर में कमी देखी गई, जब समूह को 8 सप्ताह के लिए 3 मिलीलीटर तिल के तेल के साथ इलाज किया गया था। एथेरोस्क्लोरोटिक चूहों पर किए गए एक अन्य अध्ययन से पता चला है कि तिल के तेल के उपचार ने रक्त लिपिड को 50 प्रतिशत तक कम कर दिया और एथेरोस्क्लेरोसिस को 85 प्रतिशत तक रोकने में भी मदद की। हाल के अध्ययनों ने यह भी साबित किया है कि तिल मधुमेह के उच्च रक्तचाप से ग्रस्त रोगियों के लिए भी फायदेमंद है। तिल में मौजूद फाइटोकेमिकल्स कार्बोहाइड्रेट मेटाबोलाइजिंग एंजाइमों को रोककर पोस्टप्रैंडियल हाइपरग्लाइसेमिया को

कम करने में मदद करते हैं। वसा में घुलनशील लिग्नान, सेसमिन, सेसामोलिन और Y–टोकोफेरोल जैसे बायोएक्टिव घटकों में एंटीडायबिटिक गतिविधि हो सकती है। तिल के बीज भी फाइबर का एक अच्छा स्रोत हैं। फाइबर चीनी को आत्मसात करने में बाधा डालता है, जिससे शरीर में ग्लूकोज का स्तर नियन्त्रित बना रहता है। तिल में मौजूद स्टार्च की कम मात्रा भी शर्करा के स्तर को नियंत्रित करने में मदद करती है। सेसमिन एंटी–हाइपरटेंसिव गुणों को प्रदर्शित करता है, इसके अतिरिक्त एंटी–एथेरोजेनिक, एंटी–थ्रोम्बोटिक, एंटीओबेसिटी और लिपोलाइटिक प्रभाव भी प्रदर्शित करता है।

तिल में मौजूद लिग्नान ने इन विट्रो और विवो दोनों में एंटीकैंसर प्रभाव दिखाया है। सेसमिन के कैंसर विरोधी प्रभाव को इसके एंटी–प्रोलिफेरेटिव प्रभाव, प्रो–एपोप्टोटिक प्रभाव, एंटी–मेटास्टैटिक और प्रो–ऑटोफैगोसाइटिक गतिविधियों के लिए जिम्मेदार ठहराया गया है। सेसमिन ने ट्यूमर के विकास और प्रगति को कम किया और कैंसर की रोकथाम में इस्तेमाल किया जा सकता है। तिल यकृत और गुर्दे के कार्यों की भी रक्षा करता है, इसमें सूजनरोधी प्रभाव होता है और अध्ययनों ने मनुष्यों में ऑस्टियो क्लास्टोजेनेसिस पर सेसमिन के निरोधात्मक प्रभाव की पुष्टि की है। इसके अलावा तिल के तेल और सेसमिन को बहरेपन की स्थिति में एक सुधारात्मक प्रभाव दिखाता है।

हिंदू धर्म में, तिल आध्यात्मिक महत्व और दिव्य अनुग्रह का प्रतीक बनने के लिए अपनी पाक उपयोगिता को पार करता है। प्राचीन शास्त्रों और पौराणिक कथाओं में इसका उल्लेख इसकी पवित्रता और शुभता को रेखांकित करता है। अनुष्ठानों, पूजा और सांस्कृतिक प्रथाओं के माध्यम से, तिल को पवित्रता, समृद्धि और सुरक्षा के एक शक्तिशाली प्रतीक के रूप में सम्मानित किया जाता है। तिल के आध्यात्मिक सार को अपनाने से भक्तों को परमात्मा के साथ अपने संबंध को गहरा करने और अपने जीवन में प्रचुरता और पूर्ति के आशीर्वाद का अनुभव करने में सक्षम बनाता है।

# गर्भवती महिलाओं कै लिए पथ्य

गर्भवती महिला के लिए भोजन में इडली, डोसा, ढोकला जैसे खमिरयुक्त, पित्तवर्धक तथा चीज, पनीर जैसे पचने में भारी पदार्थ नहीं होने चाहिये। ब्रेड, बिस्कुट, केक, नुडल्स (चाऊमीन), भेलपुरी, दहीबड़ा जैसी मैदे की वस्तुएँ न खाकर शुद्ध घी व आटे से बने तथा स्वास्थ्यप्रद पदार्थों का सेवन करें। कोल्डड्रिंक्स व डिब्बाबंद रसों की जगह ताजा नीबू या आँवले का शरबत लें। देशी गाय के दूध, गुलकंद का प्रयोग लाभकारी है। मांस, मछली, अंडे आदि का सेवन कदापि न करें। आयुर्वेदानुसार सगर्भावस्था में किसी भी प्रकार का आहार अधिक मात्रा में न लें। षडरसयुक्त आहार लेना चाहिए, परंतु केवल किसी एकाध प्रिय रस का अति सेवन दुष्परिणाम ला सकता है। इस संदर्भ में चरकाचार्यजी ने बताया है–

**१, मधुर (मीठा)** : अधिक मात्र में सतत सेवन करने से बच्चे को मधुमेह (डायबिटीज), गूँगापन, स्थूलता हो सकती हैं।

**२, अम्ल (खट्टा)** : अधिक मात्र में खट्टे पदार्थ जैसे इमली, टमाटर, खट्टा दही, डोसा, खमीरवाले पदार्थ अतिप्रमाण में खाने से बच्चे का जन्म से ही नाक से खून बहना, त्वचा व आँखों के रोग हो सकते हैं।

**३, लवण (नमक)** : ज्यादा नमक लेने से रक्त में खराबी आती है, त्वचा के रोग होते हैं। बच्चे के बाल असमय सफेद हो जाते हैं, गिरते हैं, गंजापन आता है, त्वचा पर असमय झुरियाँ पड़ती है तथा नेत्रज्योति कम होती है।

**४, तीखा** : अधिक मात्रा में तीखी चीजों के सेवन से बच्चा कमजोर प्रकृति का, क्षीण शुक्रधातुवाला व् भविष्य में संतानोत्पत्ति में असमर्थ हो सकता है।

**५, कड़वा** : अधिक मात्रा में कड़वे पदार्थों के सेवन से बच्चा शुष्क, कम वजन का व कमजोर हो सकता है।

**६, कषाय (कसैले)** : अति खाने पर श्यावता (नीलरोग) आती है, उर्ध्ववायु की तकलीफ रहती है।

सारांश यही है कि स्वादलोलुप न होकर आवश्यक संतुलित आहार लें।

**गर्भवती महिला रखे इन का ध्यान**

- दिन में नींद व देर रात तक जागरण न करें। दोपहर में विश्रांति लें, गहरी नींद वर्जित है।
- सीधे व घुटने मोड़कर न सोयें, अपितु करवट बदल–बदलकर सोयें।
- सख्त व टेढ़े स्थान पर बैठना, पैर फैलाकर और झुककर ज्यादा समय बैठना वर्जित है।
- गर्भिणी अपानवायु, मल, मूत्र, डकार, छींक, प्यास, भूख, निद्रा, खाँसी, आयासजन्य श्वास, जम्हाई, अश्रु इन स्वाभाविक वेगों को न रोके तथा यत्नपूर्वक वेगों को उत्पन्न न करें।
- इस काल में समागम सर्वथा वर्जित है।
- सुबह की शुद्ध हवा में टहलना लाभप्रद है।
- आयुर्वेदानुसार ९ मास तक प्रवास वर्जित है।
- चुस्त व गहरे रंग के कपड़े न पहनें।
- अप्रिय बात न सुनें व वाद–विवाद में न पड़ें। जोर से न बोलें और गुस्सा न करें। मन में उद्वेग उत्पन्न करनेवाले वीभत्स दृश्य, टीवी सीरियल न देखें व ऐसे साहित्य, नॉवेल आदि भी पढ़ें–सुनें नहीं। तीव्र ध्वनि एवं रेडियो भी न सुनें।
- दुर्गन्धयुक्त स्थान पर न रहें तथा इमली के वृक्ष के नजदीक न जायें।
- शरीर के समस्त अंगों को सौम्य कसरत मिले इस प्रकार के घर के कामकाज करते रहना गर्भिणी के लिए अतिउत्तम होता है।
- सगर्भावस्था में प्राणवायु की आवश्यकता अधिक होती है, अतः दीर्घ श्वसन (दीर्घ श्वास) व हलके प्राणायम का अभ्यास करें। पवित्र, कल्याणकारी, आरोग्यदायक भगवन्नाम–जप करें। मन को शांत व शरीर को तनावरहित रखने के लिए प्रतिदिन थोड़ा समय शवासन (शव की भांति पड़े रहना) का अभ्यास अवश्य करें।
- शांति, होम एवं मंगल ब्रत करें। देवता, ब्राम्हण, वृद्ध एवं गुरुजनों को प्रणाम करें।
- भय, शोक, चिंता, क्रोध को त्यागकर नित्य आनंदित व प्रसन्न रहें।

'ऊपर दी गयी सावधानियों का गर्भ व मन से गहरा संबंध होता है। अतः गर्भिणी को दिये गये निर्देशों के अनुसार अपनी दिनचर्या निर्धारित करें (मोक्ष प्राप्ति हेतु अपने व औरों के त्रैहिक (दैहिक दैविक व भौतिक) दुःखों को दूर करने को प्रयासरत्त रहें।

# जहांगीरपुरी में एक जिहादी ने की हिंदू महिला की हत्या, विहिप ने किया निंदा

नई दिल्ली, 27 अप्रैल। विश्व हिंदू परिषद ने दिल्ली की जहांगीरपुरी में एक जिहादी द्वारा एक हिंदू महिला की हत्या की घटना की कड़े शब्दों में निंदा की है और आरोपी विधर्मी को फांसी की सजा देने की मांग की है। विहिप इंद्रप्रस्थ प्रांत के अध्यक्ष श्री कपिल खन्ना, प्रांत मंत्री श्री सुरेंद्र गुप्ता और प्रांत संगठन मंत्री श्री सुबोध ने आज जहांगीरपुरी में पीड़ित परिवारजनों से मिलकर इस दुख की घड़ी में उनके प्रति संवेदनाएँ और सहानुभूति प्रकट की। उल्लेखनीय है कि एक जिहादी अपराधी ने बीते दिनों एक महिला को उसी के घर में घुसकर गोली मारकर हत्या कर दी। हत्या इसलिए की गई, क्योंकि आरोपी मृतक महिला की नाबालिग बेटी को बीते काफी समय से लगातार परेशान करता था और उसके साथ छेड़छाड़ करता था, जिसका विरोध नाबालिग की मृतक माँ करती थी। आरोपी जिहादी ने एक बार नाबालिग अबोध बच्ची का अपहरण भी कर लिया था, लेकिन आरोपी खुद को नाबालिग बताकर बाल सुधारगृह से इस अपराध को अंजाम देने के बावजूद भी छूट गया।

पीड़ित परिवार ने मांग की है कि इस निर्मम जिहादी को फांसी की सजा दी जाए। उन्होंने बताया कि इस जिहादी ने झूठा आयु प्रमाण पत्र देकर खुद को नाबालिग साबित करने की कोशिश की है। अगर पुलिस–प्रशासन कार्रवाई नहीं करती और यह अपराधी छूट जाता है, तो भविष्य में भी वह सुरक्षित नहीं रह पाएंगे। पीड़ित परिवार ने इस मामले को फास्ट ट्रैक कोर्ट में जल्दी सुनवाई करके आरोपी को फांसी की सजा देने की मांग की है। विहिप के अध्यक्ष श्री खन्ना ने बताया कि संकट की इस घड़ी में विहिप पीड़ित परिवार के साथ खड़ा है। उन्होंने कहा कि ऐसे आतंकवादी जिहादी अपने कुकर्मों से कभी बाज नहीं आते। बीते चार वर्षों से यह विधर्मी पीड़ित परिवार को धमकी दे रहा है और इस परिवार की नाबालिग बच्ची को लगातार परेशान कर रहा है। कुछ समय पहले उसने नाबालिग बच्ची को अगवा कर लिया था, जिस मामले में आरोपी जिहादी पर मुकदमा भी चला, लेकिन नाबालिग होने का झूठा षड्यंत्र रचकर, वह बाल सुधार गृह से वापस आ गया और फिर से परिवार को धमकाने लगा।

श्री खन्ना ने कहा कि पीड़ित परिवार ने प्रशासन और पुलिस को कई बार इस जिहादी की आपराधिक हरकतों के बारे में सूचित किया, लेकिन प्रशासन ने उनकी बातों को गंभीरता से नहीं लिया। इस पूरे घटनाक्रम में प्रशासन की ओर से गंभीर चूक हुई है। प्रशासन की गलती के कारण ही इस विधर्मी की हिम्मत इतनी बढ़ गई कि उसने नाबालिग बच्ची की माँ की गोली मारकर हत्या कर दी। उन्होंने कहा कि प्रशासन की अकर्मण्यता की वजह से ही इतनी बड़ी घटना घटी है। चार वर्षों से यह विधर्मी खुद को 17 वर्ष का बताता रहा है और इसकी आड़ लेकर बच रहा था।

श्री खन्ना ने आरोप लगाया कि पुलिस प्रशासन सिर्फ जहांगीरपुरी में विहिप के हनुमान जयंती के अवसर पर आयोजित होने वाली शोभायात्राओं को रोकने में शक्ति दिखाता है, लेकिन ऐसे गंभीर मामलों में कोई कार्रवाई नहीं करता, यह बहुत ही निंदनीय है। प्रांत मंत्री श्री गुप्ता ने कहा कि समाज को इस घटना से सबक लेने की जरूरत है। ये घटना साबित करती है कि हिंदू समाज को जिहादी लोगों से दूरी बनाए रखने की कितनी जरूरत है। प्रशासन की कार्य प्रणाली पर भी इस घटना के बाद बड़ा प्रश्न चिन्ह लग गया है। उन्होंने मांग की कि ऐसी गंभीर आपराधिक प्रवृत्ति के मामलों में आरोपी विधर्मी नाबालिग की आयु पर पुनः विचार किया जाना जरूरी है और इस गंभीर आपराधिक कृत्य के लिए ऐसे जिहादी को फांसी की सजा मिलनी चाहिए।

# अशोक नगर में लव जिहाद की घटना

डूंगासरा की घटना को लेकर वाल्मीकी समाज के लोगों ने कलेक्टर, एस.पी. को ज्ञापन देकर मांग की कि आरोपियों पर कठोर कार्रवाई की जाए, बुलडोजर चलाया जाए। इस अवसर पर वाल्मिकी समाज के अध्यक्ष राजेश बालू, संजीव घावरी, आशीष बालू, कमलेश बालू, लड़की के पिता धर्मवीर मेहतर, जितेंद्र नहरिया के नेतृत्व में वाल्मिकी समाज के प्रतिनिधि मंडल ने ज्ञापन देकर मांग की कि आरोपी पर 376 की कार्रवाई की जाए। साथ ही विश्व हिंदू परिषद–बजरंग दल ने भी ज्ञापन देकर वाल्मीकि समाज को जब तक न्याय नहीं मिलेगा बजरंग दल भी आंदोलन में सहयोग करेगा, यह घोषणा की। इस अवसर पर प्रांत धर्मप्रसार प्रमुख डॉ. दीपक मिश्रा ने कहा कि वाल्मीकि समाज की बेटी के साथ न्याय के लिए हम लड़ेंगे। इस मौके पर वाल्मिकी समाज एवं विश्व हिंदू परिषद, बजरंग दल के कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

# श्री हनुमान युवा केंद्र का अनावरण जबरदस्त सामुदायिक समर्थन

ऑकलैंड, 29 अप्रैल 2024। हिंदू संगठन, मंदिर और एसोसिएशन (HOTA) फोरम एन जेड ने गर्व से एक ऐतिहासिक स्थल का उद्घाटन श्री हनुमान युवा केंद्र ऑकलैंड के प्रतिष्ठित भारतीय मंदिर में किया। यह दूरदर्शी परियोजना सांस्कृतिक विरासत को सामुदायिक सशक्तिकरण के साथ जोड़ने में एक महत्वपूर्ण क्षण है। उद्घाटन समारोह को न्यूजीलैंड हिंदू समुदाय से भारी समर्थन मिला। 100 से अधिक समर्पित स्वयंसेवकों और सामुदायिक नेताओं ने भाग लिया, लॉन्च की शुरुआत हुई। मंदिर के पुजारी आचार्य श्री उपेन्द्र जोशी और आचार्य जय द्वारा नारायण शास्त्री, श्री अनिल शर्मा के साथ, प्रयास के लिए दिव्य आशीर्वाद का आह्वान करते हुए पूजन समारोह का संचालन किया। वातावरण भजन, सत्संग, प्रार्थना समूह ट्रस्ट ऑकलैंड द्वारा मधुर गायन, आध्यात्मिक उत्साह से गूंज उठा। हनुमान चालीसा, उसके बाद भावपूर्ण भक्ति गीत हुए। प्रतिभागियों को आशीर्वाद भी दिया गया। अयोध्या में प्रतिष्ठित श्री राम मंदिर से पवित्र प्रसाद, एकता और पवित्रता की भावना को बढ़ावा देता है। प्रोफेसर गुना मैगेसन, न्यूजीलैंड की हिंदू परिषद के अध्यक्ष और एओटेरोआ से एकमात्र प्रतिनिधि श्री रामलला के प्राण प्रतिष्ठा समारोह में शामिल होने के लिए न्यूजीलैंड से आए थे, उन्होंने पवित्र प्रसाद का सभी को वितरण किया।

HOTA फोरम NZ के राष्ट्रीय समन्वयक श्री विनोद कुमार ने उपस्थित लोगों का गर्मजोशी से स्वागत किया। परियोजना के उद्देश्यों का एक व्यावहारिक सिंहावलोकन, युवा प्रतिभाओं के सहयोगात्मक प्रयास पर प्रकाश डालते हुए श्री कुमार ने दो उभरते वास्तुकारों श्री वंश पटेल और श्री देवर्ष पटेल का परिचय कराया, जिन्होंने इसकी संकल्पना की। श्री हनुमान युवा केंद्र के लिए डिजाइन की। इस दूरदर्शी प्रतिष्ठान में 40 फीट की आकर्षक प्रतिमा होगी। श्री हनुमान जी, प्रेरणा के प्रतीक के रूप में सेवारत हैं, साथ ही एक गतिशील युवा केंद्र भी स्थित है, जो ऑकलैंड के बाहरी इलाका में है। इसके बाद HOTA फोरम NZ के क्षेत्रीय समन्वयक (हैमिल्टन) डॉ. विनय करणम ने एक भाषण दिया। परियोजना के दायरे और महत्व को स्पष्ट करने वाली व्यापक प्रस्तुति दी। श्री हनुमान युवा केंद्र का लक्ष्य युवाओं की शैक्षिक, मनोरंजन और सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने वाले एक जीवंत केंद्र के रूप में उभरना है। 18–35 आयु वर्ग के व्यक्तियों का व्यक्तिगत विकास, नेतृत्व संवर्धन और समुदाय पर ध्यान देने के साथ सामंजस्य, केंद्र समग्र विकास के लिए एक परिवर्तनकारी स्थान का प्रतीक है। परियोजना का रोडमैप परियोजना प्रबंधन को शामिल करने वाली विशेष टीमों के गठन की रूपरेखा तैयार करता है। रियल एस्टेट, टाउन प्लानिंग, आर्किटेक्चर, मार्केटिंग, फंडरेजिंग, पीआर, आईटी और डिजिटल प्रबंधन, लेखांकन, श्री हनुमान प्रतिमा और सरकारी संपर्क। प्राथमिकता वाले कार्यों में उपयुक्त भूमि का अधिग्रहण शामिल है और सरकारी निकायों, निजी दानदाताओं, हितधारकों और स्थानीय के साथ रणनीतिक साझेदारी के माध्यम से धन सुरक्षित करना।

युवा सामुदायिक केंद्र का लक्ष्य हिंदू समुदाय के सामाजिक ताने–बाने में महत्वपूर्ण योगदान देना है। जिम्मेदार और सशक्त नागरिक बनाना। यह परियोजना विभिन्न क्षेत्रों में विशेषज्ञता वाले व्यक्तियों को आमंत्रित कर रही है। इस 4 से 5–वर्षीय पहल की सफलता के लिए समर्पित एक विविध टीम बनाने के लिए ऊपर सूचीबद्ध अनुशासन। लगभग 8–10 मिलियन NZ का अनुमानित बजट। एक बहुआयामी भवन के रूप में कल्पना किए गए, श्री हनुमान युवा केंद्र में एक बहुमंजिला संरचना, आवास विविध सुविधाएँ होंगी। भूतल पर सेमिनार कक्ष, बैठक स्थल और एक स्थान होगा। बहुउद्देशीय हॉल, युवा संगठनों के बीच सहयोग और तालमेल को बढ़ावा देना। प्रथम स्तर पर भारतीय विरासत की समृद्ध टेपेस्ट्री का प्रदर्शन किया जाएगा, जबकि दूसरे स्तर पर शाकाहार का प्रदर्शन किया जाएगा। रेस्तरां/कैफे, एक साहित्य– समृद्ध किताबों की दुकान, एक व्यापक पुस्तकालय और एक विशाल समारोह हॉल, सांस्कृतिक कार्यक्रम।

इसके अलावा केंद्र 80 युवाओं के लिए छात्रावास, खेल सहित आउटडोर मनोरंजन सुविधाएँ प्रदान करेगा। पारंपरिक खेलों, प्रकृति पथों, शिविर क्षेत्रों और सामुदायिक उद्यानों के लिए मैदान, समग्र कल्याण को बढ़ावा देना–अस्तित्व और पर्यावरण प्रबंधन करना। संक्षेप में श्री हनुमान युवा केंद्र जबकि युवाओं को सशक्त बनाने के लिए एक सामूहिक प्रयास का प्रतीक है। समुदाय के सांस्कृतिक ताने–बाने को समृद्ध करना। HOTA फोरम NZ की एक पहल के रूप में यह परियोजना कायम है। न्यूजीलैंड में हिंदू समुदाय की एकता और गतिशीलता के प्रमाण के रूप में।

# सातवां ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रीय हिंदू सम्मेलन सम्पन्न

## हिंदुओं को एकजुट करना और ऑस्ट्रेलिया के विकास और समृद्धि के लिए एक उज्ज्वल भविष्य बनाना

विश्व हिंदू परिषद ऑफ ऑस्ट्रेलिया (विहिप) ने हिंदुओं का प्रतिनिधित्व करते हुए 250 प्रतिनिधियों को आमंत्रित किया। सामुदायिक संगठन, मीडिया प्रतिनिधि, व्यवसायी, पेशेवर और राजनेता 7वें ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रीय हिंदू सम्मेलन में ऑस्ट्रेलिया के सभी सात राज्यों से आए। सिडनी, न्यू साउथ वेल्स, 20 अप्रैल, 2024 को सम्मेलन, थीम 'बढ़ता समुदाय, फलता–फूलता ऑस्ट्रेलिया' नोवोटेल पैरामाट्टा में आयोजित किया गया था। श्री सुब्रमण्यम द्वारा सम्मेलन प्रतिनिधियों, वक्ताओं और गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया गया, राममूर्ति, वीएचपी ऑस्ट्रेलिया के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं। श्रीमती अकिला रामरथिनम, राष्ट्रीय महासचिव, विहिप ऑस्ट्रेलिया ने अपना भाषण दिया, विभिन्न कार्यक्रमों और गतिविधियों के माध्यम से विहिप ऑस्ट्रेलिया की सेवा पर प्रकाश डाला गया। अपने मुख्य भाषण में हिंदू यूथ ऑस्ट्रेलिया के सुशांत सुब्रमण्यम ने इस पर प्रकाश डाला। 2021 की जनगणना के अनुसार हिंदू समुदाय में बड़ी संख्या में युवा शामिल हैं, ऑस्ट्रेलियाई औसत की तुलना में अत्यधिक योग्य और उच्च आय अर्जित करने वाले हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया। अर्थव्यवस्था, शिक्षा, अनुसंधान, नवाचार, आईटी और स्वास्थ्य सेवाओं में हिंदू समुदाय का महत्वपूर्ण योगदान है। सुब्रमण्यम ने निष्कर्ष निकाला कि ऑस्ट्रेलिया में हिंदू न केवल रहते हैं, बल्कि जीवंत भी हैं।

उद्घाटन सत्र में माननीय क्रिस बोवेन, संघीय जलवायु परिवर्तन मंत्री और एनर्जी ने ऑस्ट्रेलिया के विश्व हिंदू परिषद को हिंदू के नेतृत्व के लिए बधाई दी। समुदाय और ऑस्ट्रेलिया के विकास और समृद्धि में हिंदुओं का महत्वपूर्ण योगदान है। वह टिप्पणी की गई कि सार्वभौमिक स्वीकृति का संदेश, विश्व एक परिवार है, विहिप द्वारा प्रचारित, गहराई से प्रतिध्वनित होता है। रिवरस्टोन एनएसडब्ल्यू के सांसद श्री वॉरेन किर्बी ने अपनी भारत यात्रा पर विचार किया, जहाँ उन्होंने सड़क पर देखा राम मंदिर निर्माण का जश्न। उन्होंने ऑस्ट्रेलियाई के महत्व पर जोर दिया। 'विश्व एक परिवार है' और सभी के लिए सम्मान हिंदू सिद्धांतों को अपनाने वाला सांसद हूँ। मैकडरमॉट ने बच्चों को भाषा सिखाने के लिए जमीनी स्तर के काम के लिए विहिप की प्रशंसा की। और COVID के दौरान समुदाय का समर्थन करना बताया।

माननीय स्कॉट फार्लो एमएलसी, एनएसडब्ल्यू संसद में विश्व हिंदू परिषद के कट्टर समर्थक भी हिंदू समुदाय के भीतर नेतृत्व के लिए ऑस्ट्रेलिया की विश्व हिंदू परिषद की सराहना की और उन्हें अपने समर्थन का आश्वासन दिया। उन्होंने सभी सांसदों के द्विदलीय समर्थन का उल्लेख किया। मार्च 2021, जब संसद ने विहिप की साख का समर्थन करते हुए एक प्रस्ताव पारित किया। पहले सत्र में सरकारी निकायों और हिंदू के बीच सहयोग पर चर्चा हुई। एनएसडब्ल्यू पुलिस बल, कानूनी संस्थाओं और बहु–आस्था के प्रतिनिधि संगठनों ने सरकारी अपेक्षाओं और प्रभावी सहभागिता रणनीतियों पर चर्चा की।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता नेता के बहुसांस्कृतिक मामलों के सलाहकार श्री कार्तिक अरासु ने की। विपक्षी माननीय पीटर डटन सांसद, स्थानीय पार्षद रीना जेठी ने संगठनों से प्रोत्साहित करने का आग्रह किया। हिन्दू समुदाय के सदस्य राजनीति में भाग लें, उन्होंने राजनीति

के रास्ते बताए। ऑस्ट्रेलिया में आपराधिक वकील सुश्री यशवी शाह ने प्रशासन, पुलिस, कानून और न्यायपालिका में हिंदुओं की स्थिति के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने बच्चों को इसके लिए प्रोत्साहित करने की वकालत की। प्रतिनिधित्व करने और प्रभावित करने के अंतर को भरने के लिए कानूनी अध्ययन और विभिन्न कानूनी पेशे अपनाएँ जाएँ, हमारे समुदाय के लिए कानूनी नीतियाँ हैं। द ऑस्ट्रेलिया टुडे के संस्थापक और मुख्य संपादक जितार्थ जय भारद्वाज ने हिंदुओं को प्रोत्साहित किया। नकारात्मक चित्रणों को संबोधित करने के लिए संगठनों को मीडिया के साथ सक्रिय रूप से जुड़ना होगा। उन्होंने जोर दिया कि हिंदुओं के लिए अपनी कहानियाँ साझा करना आवश्यक है, उन्होंने कहा कि 'गैर–हिंदू ही हमारी कहानियाँ बता रहे हैं, क्योंकि हम इसे स्वयं नहीं कर रहे हैं।'

सत्र का मुख्य आकर्षण एक पैनल चर्चा थी, जिसमें छह देशों के हिंदू शामिल थे–बाँग्लादेश, भारत, भूटान, इंडोनेशिया, नेपाल और श्रीलंका, हिंदू के रूप में अपने अनुभव साझा कर रहे हैं। उन्होंने बड़े समूह द्वारा आयोजित उत्सवों और कार्यक्रमों में भाग लेने में गहरी रुचि व्यक्त की। सभी उपस्थित संगठनों ने संवर्द्धन के लिए सभी देशों से हिंदुओं को आमंत्रित करने का संकल्प लिया। भागीदारी और भूटानी हिंदू शरणार्थियों की दुर्दशा जैसे कारणों का समर्थन किया। बाँग्लादेश में हिंदुओं पर अत्याचार–संघीय, राज्य और स्थानीय सरकारों के सभी निर्वाचित प्रतिनिधि, नेताओं के साथ अंतरधार्मिक समूहों ने सर्वसम्मति से हिंदू समुदाय के सकारात्मक योगदान को स्वीकार किया। उन्होंने न सिर्फ बातचीत की अगुवाई करने के लिए विहिप को धन्यवाद और बधाई दी, अपितु विहिप के कार्यों की प्रशंसा भी की।

***प्रस्तुति : राजेंद्र पांडे***
***विहिप ऑस्ट्रेलिया प्रवक्ता***

## *चौरासी कोसी परिक्रमा के लिए परिक्रमार्थी रवाना,*
# मखौड़ा से परिक्रमा का शुभारम्भ

अयोध्या। हनुमान मंडल की अवध धाम चौरासी कोसी परिक्रमा को प्रातः छह बजे से प्रारंभ हुई। आज कारसेवकपुरम से परिक्रमार्थी मखभूमि (मखौड़ा धाम) के लिए प्रस्थान कर गए। 21 दिनी परिक्रमा बस्ती, अयोध्या, बाराबंकी व गोंडा जनपद की विभिन्न तपस्थलियों से होते हुए 14 मई को संपन्न हुई। विश्व हिन्दू परिषद के संरक्षक और प्रारंभ से ही मंदिर आंदोलन से जुड़े रहे पुरुषोत्तम नारायण सिंह ने ओम ध्वज दिखाकर मखौड़ा (मखभूमि) के लिए परिक्रमार्थियों को रवाना किया, जो बुधवार चौबीस अप्रैल को हवन पूजन अनुष्ठान के बाद मखौड़ा से प्रारंभ हुई। अपने संबोधन में विहिप संरक्षक पुरुषोत्तम नारायण सिंह ने कहा कि अयोध्या धाम का कण–कण पूज्य है, चौरासी कोस की परिक्रमा हमारी आस्था, श्रद्धा और भक्ति को समाहित कर समाज को एक सूत्र में बांधने का माध्यम है। चौरासी कोस की परिक्रमा से भक्तों का जीवन धन्य हो जाता है। लाखों वर्ष की प्राचीन परंपराओं को जीवंत करने वाले भक्तों की समर्पण और भक्ति को सदा नमन है। इतनी लंबी दूरी और भीषण गर्मी में भी आस्था का निर्वाह, यह प्रभु राम लला के आशीर्वाद से ही संभव है।

विश्व हिन्दू परिषद के मीडिया प्रभारी और प्रांत प्रवक्ता शरद शर्मा ने इस अवसर पर कहा कि परिक्रमा में दिख रहा उत्साह और भक्ति हमें पूर्वजों के संकल्प की सिद्धि को जीवंत रखने की प्रेरणा देती है। 2013 में समाजवादी पार्टी की अखिलेश सरकार ने प्रतिबंध लगाकर भक्तों की धार्मिक भावनाओं को आहत किया था। आस्था और भक्ति पर जब–जब प्रतिबंध लगा, वह और मजबूती के साथ आगे बढ़ी। आज उत्साह और उमंग से यह परिक्रमा निकल रही है, जिसमें प्रतिवर्ष भक्तों की सँख्या निरंतर बढती जा रही है। हनुमान मंडल परिक्रमा के प्रभारी सुरेन्द्र सिंह के अनुसार अनंतकाल से चली आ रही चौरासी कोसी परिक्रमा जीवन को कष्टों व व्याधियों से मुक्त करा प्रभु चरणों में समर्पित होने का माध्यम है। बैशाख कृष्ण प्रतिपदा तदनुसार 24 अप्रैल को प्रातः छह बजे मखभूमि से प्रारंभ होकर परिक्रमा बैशाख शुक्ल सप्तमी यानि 14 मई को पुनः मखौड़ा पहुँच कर संपन्न होगी। इस दौरान परिक्रमा पाँच जनपदों से होकर दो सौ पैंसठ किलोमीटर की दूरी तय करेगी। इन स्थानों पर बाईस पड़ाव होंगे, जहाँ भोजन जलपान और रात्रि निवास की व्यापक व्यवस्था की गयी है। इस दौरान कटरा कुटी के महंत चिन्मय दास जी, सुभाष भट्ट, आदित्य उपाध्याय, सुबोध मिश्र, शिवा सिंह, सत्यम तिवारी, हीरा लाल, बालचंद्र वर्मा आदि उपस्थित रहे।

प्रस्तुति : श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र संवाद केन्द्र, अयोध्याधाम.

सिडनी, न्यू साउथ वेल्स में 20 अप्रैल, 2024 को 7वाँ अस्ट्रेलियाई राष्ट्रीय हिंदू सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें आस्ट्रेलिया के 7 राज्यों के 250 प्रतिनिधियों ने सहभागिता की।

बठिण्डा (पंजाब) में हनुमान जन्मोत्सव पर विहिप, बजरंग दल द्वारा भव्य रथ यात्रा का आयोजन

अयोध्या। हनुमान मंडल की अवध धाम चौरासी कोसी परिक्रमा यात्रा का मखौड़ा धाम से शुभारम्भ हुआ।

न्यू होरायजॉन इंजीनियरिंग कॉलेज, बंगलोर में अभियान्त्रिकी शाखा के विद्यार्थियों के समक्ष 'भारत को विश्वगुरू बनाने में युवाओं की भूमिका' विषय पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद जी पराण्डे।

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6
email:hinduvishwa@gmail.com
website: www.vhp.org

Postal Regd. No. DL-SW-01/4031/24-26
समाचार पत्र पंजी. सं. 68516/98
प्रकाशन तिथि : 13.05.2024
प्रेषण तिथि : 14-15 (अग्रिम-पाक्षिक)

02 मई को नई दिल्ली में पूर्व न्यायाधीश माननीय कमलेश्वर नाथ जी द्वारा लिखित 'इयरनिंग फॉर राम मंदिर एंड फुलफिलमेंट' के विमोचन समारोह को संबोधित करते श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के महामंत्री श्री चम्पत राय जी, कार्यक्रम में विहिप अध्यक्ष मा. आलोक कुमार जी भी उपस्थित रहे।

विहिप नेपाल द्वारा धनगढ़ी में थारू संस्कार, संस्कृति, परम्परा के संरक्षण तथा संवर्धन में समर्पित पूज्य गुरूवा, भगत तथा बड़घर भलमनसा के सम्मान का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। थारू समुदाय में ईसाई मिशनरियों द्वारा चलाए जा रहे मतांतरण के षड्यंत्रों को रोकने के बारे में भी विचार हुआ।

हिमाचल प्रदेश की प्रांत बैठक में उपस्थित विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद जी पराण्डे। बैठक में षष्ठिपूर्ति निमित्त कार्यविस्तार, युवाओं में बढ़ती नशा की समस्या, लव जिहाद, पूज्य संत-मंदिर-पुजारी-धार्मिक यात्राओं की रचना, ईसाई मिशनरियों द्वारा चल रहे षड्यंत्रों का उपाय, हिंदू संस्कारों की दृढ़ता आदि विषयों पर विचार तथा निर्णय हुआ।

प्रकाशक व मुद्रक हरिशंकर द्वारा सचिव, साहित्य एवं दृक्श्राव्य सेवा न्यास की ओर से 'रॉयल प्रेस' बी-82, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया फेस-1, नई दिल्ली-110020 से छपवाकर संकटमोचन आश्रम, सेक्टर-6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-22 से प्रकाशित। सम्पादक : विजय शंकर तिवारी